वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :4 अंक : 137 | मंगलवार 10 सितम्बर 2024 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

'सभी आस्थाओं और विश्वासों का संगम स्थल है रामदेवरा'

लोकसभा अध्यक्ष ने पदयात्रा कर किए समाधि स्थल के दर्शन

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैसलमेर जिले के रामदेवरा के प्रवास पर आए लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सोमवार को बाबा रामदेव की समाधि के दर्शन किए। बिरला 1.5 कि.मी. तक पदयात्रा करते हुए बाबा के धाम पहुंचे और पूजा अर्चना कर देश में खुशहाली की कामना की। बिरला ने कहा कि राजस्थान ही नहीं बल्कि देशभर के असंख्य श्रद्धालुओं की आस्था के केंद्र रामदेवरा में बाबा के दर्शन के लिए आना मेरे लिए सुखद क्षण है। बाबा रामदेव जी की महिमा अपरम्पार है, उनका जीवन हम सभी के लिए एक उज्ज्वल प्रेरणा है। उनका आशीर्वाद सदैव हम पर बना रहे और हम उनके आदर्शों पर चलते हुए एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकें। सर्वधर्म सद्भाव के प्रतीक बाबा रामदेव जी ने सामाजिक भेदभाव का विरोध करते हुए असहायों को सशक्त बनाने में जीवन समर्पित किया। उनके आदर्श हमारे प्रेरक मार्गदर्शक हैं। हम सभी उनके आदर्शों का पालन करें और समाज में समरसता, एकता, और भाईचारे का संदेश फैलाएं। बाबा रामदेव जी का जीवन केवल एक संत या महापुरुष का जीवन नहीं था, बल्कि वह एक ऐसे लोकदेवता हैं जिन्होंने अपने जीवन के माध्यम से समाज में क्रांति और सुधार का संदेश दिया। बिरला के साथ ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर और ओएसडी राजीव दत्ता भी मौजूद रहे। गौरतलब है कि यह धाम विश्व प्रसिद्ध है।

मेघवाल समाज ने किया सम्मान

रामदेवरा में स्पीकर बिरला मेघवाल समाज के सम्मान समारोह में शामिल हुए। बाबूलाल मेघवाल के नेतृत्व में उनका समाजजनों ने स्वागत किया। बिरला ने कहा कि बाबा रामदेव जी का मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं है, बल्कि यह उन सभी आस्थाओं और विश्वासों का संगम स्थल है, जो एकता, प्रेम और भाईचारे का प्रतीक है। इस यात्रा के दौरान जाति, धर्म, और भेदभाव की सभी सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं। यह बाबा रामदेव जी की महानता का प्रतीक है, जो लोगों को आपस में जोड़ती है। इस दौरान सांसद उम्मेदाराम बेनीवाल, विधायक महंत प्रतापपुरी महाराज सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

उपमुख्यमंत्री का दिल्ली दौरा

वोकल फोर लोकल' की थीम पर तैयार हो राजस्थान हाउस: दिया कुमारी

निर्माणाधीन राजस्थान हाउस का किया निरीक्षण

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान की उपमुख्यमंत्री और सार्वजनिक निर्माण विभाग और पर्यटन मंत्री श्रीमती दिया कुमारी ने सोमवार को नई दिल्ली में निर्माणाधीन राजस्थान हाउस का निरीक्षण करके हाउस के निर्माण की कार्य प्रगति का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों के साथ मीटिंग भी की जिसमें इंजीनियरों ने राजस्थान हाउस को लेकर प्रेजेंटेशन दिया कि कहां तक कार्य हो चुका है और आगे क्या कुछ करना है। बैठक में उप मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से चर्चा के दौरान निर्माणाधीन हाउस के पूरे ब्लूप्रिंट को समझते हुए उन्होंने अधिकारियों से साफ तौर पर कहा कि इस निर्माणाधीन भवन के तैयार होने के बाद जब यहां पर लोग आए, इसके अंदर जब लोग पहुंचे तो आगंतुकों को लगे कि हम राजस्थान आ गए हैं। यहां की सारी व्यवस्थाएं राजस्थानी कल्चर से मेल खाते हुए डेवलप होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि आप लोग एक रिव्यू मीटिंग भी बुलाए और रिव्यू मीटिंग करके हमें जरूरत पड़ेगी तो इसमें जरूरी बदलाव भी किए जाएंगे। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली में बनकर तैयार होने वाला यह भवन सिर्फ एक बिल्डिंग मात्र नहीं बल्कि राजस्थान का दर्पण होना चाहिए।

निर्माण कार्य में राजस्थानी आर्टिजंस के हुनर और राजस्थानी निर्माण सामग्री का किया जाए उपयोग: निरीक्षण के दौरान दिया कुमारी ने अधिकारियों और इंजीनियरों को स्पष्ट निर्देश दिए की इस भवन के निर्माण कार्य में लगने वाली हर एक सामग्री में राजस्थानी निर्माण सामग्री को प्राथमिकता दी जाए, चाहे वह राजस्थानी पत्थर हो चाहे वह राजस्थानी पेंटिंग के साथ-साथ राजस्थान के हुनरबंद कारीगरों को भी इसके निर्माण कार्य में प्राथमिकता के साथ स्थान दिया जाना चाहिए ताकि हमारे लोगों को रोजगार के अवसर भी मिल सके और इस भवन के निर्माण में राजस्थानी कला और संस्कृति की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई दे सके। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली में बनने वाले विश्व स्तरीय भवनों में जब राजस्थानी पत्थर का उपयोग हो सकता है तो राजस्थान हाउस के निर्माण में भी राजस्थानी पत्थर का भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए।

किसी गरीब आदमी को देख कर आपकी आंख में आंसू आना चाहिए : मुनि पुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज

श्रावक संस्कार शिविर में हजारों शिविरार्थियों ने की महापूजा

संस्कारो की विधि को संयम पूर्वक ग्रहण करने पर वह साथ जायेगी

सागर. शाबाश इंडिया

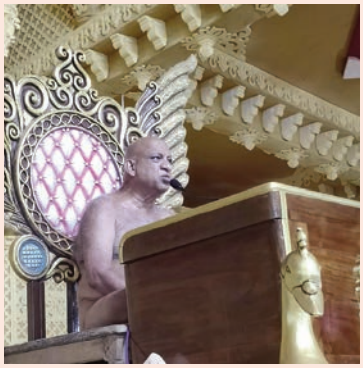

अपने लिए तो बहुत आंसू निकलते कभी किसी गरीब के लिए दो आंसू आये हम अपने और अपनो के लिए बहुत दुखी हो जाते हैं कभी किसी रोड़ पर पड़े रोगी को पीड़ित को देखकर दुखी हो जाये तो सच्चा धर्म है। संसार के दुखो को कैसे दूर करूं ये वात मन में आते ही आपके अंदर मार्दव धर्म प्रकट हो जाता है आपके अंदर गरीब आदमी असाहय व्यक्ति के प्रति दया करुणा जागी गरीब आदमी के लिए आंसू आने पर ही आपको मार्दव धर्म आ जायेगा।

संगीत के साथ हो रही है महा पूजन

मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने बताया कि 31वे श्रावक संस्कार शिविर में आज प्रातः काल की वेला में मुनिपुगंव श्री सुधा सागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में ध्यान का सत्र किया गया इसके बाद जगत कल्याण की कामना से महा शान्ति धारा मुनि पुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज के श्री मुख से हुई जिसका सौभाग्य दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी के पूर्व अध्यक्ष अरविंद जैन मक्कू सिंघई परिवार मुंगावली के साथ ही शिविर पुण्यर्जक परिवार कमल कुमार रिषभ कुमार वादरी परिवार सहित अन्य भक्तों को मिला इसके बाद प्रतिष्ठा चार्य प्रदीप भइया व वाल ब्रह्मचारी विनोद भ इया के मधुर भजनों के साथ महा पूजन की जा रही है।

क्रिया हीन धर्म दुनिया में अस्तित्वहीन हो जाता है

इस दौरान धर्म सभा में मुनि पुगंव श्री सुधा सागर जी महाराज ने कहा कि क्रिया हीन धर्म दुनिया में अस्तित्व हीन होता है क्रिया धर्म विहीन हो सकती है लेकिन धर्म क्रिया के विना नहीं हो सकता धर्म सर्वेश्रेष्ठ है लेकिन उसके हाथ में कुछ भी नहीं है जैसे राष्ट्रपति सबसे बड़ा है लेकिन वह अपना काम खुद नहीं कर सकता वह गोली नहीं चला सकते उनके लिए बाडीगर्ड है रसोईया रसोई बनाता है वह स्वयं नहीं वना सकता है हमने कल कहा था धर्मात्मा पहले नम्बर पर कहा था धर्म को वाद में लिया जो हमें चलता है उसका नाम धर्म रख दिया और रूकने का नाम अधर्म है धर्म वो है जो किसी न किसी के पास है और धर्मात्मा वो है जो कोई ना कोई किया कर रहा है ।

हमारी हर क्रिया में धर्म दिखाई देना चाहिए

हमारी हर क्रिया में धर्म दिखना चाहिए संसारी व्यक्ति भोजन करते हुए भोजन का आनंद लेता है और धर्मात्मा भोजन करते हुए भी उसको सोधते हुए ग्रहण करता है हर क्रिया में धर्म होना चाहिए आप लोग आहार देखने नहीं जाते आप आहार करते समय धर्म देखने जाते हैं क्या ले रहे हैं उसमें आप देखते हैं शुद्ध ले रहा हैधर्म का वीज ग्रहस्थ के घर में ही उत्पन्न होता है ग्रहस्थ के सबसे पहले मानव धर्म पलता है जो दूसरों के दुःख को देखकर दुखी हो जाता है उसको मार्दव धर्म प्रकट हो जाता है अपने लिए तो बहुत रो लिए जरा दूसरो के लिए दो आंसू आ जाये तो आप अपने आप को धर्मात्मा समझना अपने लिए तो बहुत आंसू बहाये कभी किसी गरीब के लिए आंसू बहाये तो धर्मात्मा समझना उक्त आश्य केउद्गार भाग्योदय तीर्थ में हजारों शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज ने व्यक्त किए ।

जनकपुरी में पूजा पाठ के साथ ध्यान और योग का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। जनकपुरी ज्योतिनगर जैन मंदिर में सोमवार को दस लक्षण महापर्व महोत्सव में मार्दव धर्म की पूजा भक्ति भाव के साथ हुई । प्रबन्ध समिति अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया कि प्रातः विधान मण्डल पाण्डुशीला पर शान्तिधारा करने का सोभाग्य सरदार मल काला परिवार को व राकेश उर्मिला जैन परिवार को तथा वेदी पर प्रियांश बिलाला व राजेश गर्ग को मिला। इसके बाद नित्य पूजन व मार्दव धर्म विधान पूजन शिखर चन्द किरण जैन द्वारा साज बाज के साथ अर्थ समझाते हुए करायी गई । विधान पूजन के बाद मार्दव धर्म के 108 जाप्य स्वाहा स्वाहा बोलते हुए किये गये। इधर दिन में तत्वार्थ सूत्र की क्लास में स्वाध्याय प्रेमियों का उत्साह देखा गया तथा शाम को आरती के पश्चात रिद्धि एवं बीज मन्त्र युक्त ध्यान का आयोजन हुआ जिसमे बच्चों व बड़ो सभी की भारी सहभागिता रही ।

दशलक्षण महापर्व का शुभारंभ

निवाई में सोमवार को उत्तम मार्दव धर्म की पूजा में उमड़ा जैनसैलाब

गायक विमल जौंला के भजनों पर झूमे श्रद्धालु

निवाई. शाबाश इंडिया

कृषि मण्डी के समीप जैन मुनि अनुसरण सागर महाराज के सानिध्य में श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर सहित शहर के सभी जिनालयों में दशलक्षण महापर्व का शुभारंभ किया गया। चातुर्मास कमेटी के प्रचार-प्रसार संयोजक विमल पाटनी जौंला एवं राकेश संधी ने बताया कि जैन धर्मावलंबियों का दशलक्षण महापर्व का शुभारंभ हुआ जिसमें 8 सितंबर से 17 सितंबर तक दशलक्षण महापर्व की आराधना की जाएगी। जैन धर्म प्रचारक विमल जौंला एवं राकेश संधी ने बताया कि निवाई के सभी जिनालयों में पहले दिन उत्तम क्षमा धर्म की पूजा अर्चना भक्ति भाव से हुई। जैन समाज के मंत्री महावीर प्रसाद पराणा एवं चातुर्मास कमेटी के संयोजक हितेश छाबड़ा ने बताया कि 9 सितंबर को पण्डित सुरेश कुमार शास्त्री के निर्देशन में उत्तम मार्दव धर्म की विशेष आराधना की गई जिसमें श्री जी को विराजमान एवं शांतिधारा करने का सौभाग्य श्रेष्ठी संजय कुमार सोगानी श्रीमती शशी सोगानी को मिला। बड़ा जैन मंदिर के पूर्व मंत्री महेन्द्र चंवरिया एवं मंत्री मोहित चंवरिया ने बताया कि नसिंया जैन मंदिर बिचला जैन मंदिर बड़ा जैन मंदिर बंपुई वालों का चेत्याल्य सहित सभी जैन मंदिरों में दशलक्षण महापर्व में सोमवार को उत्तम मार्दव धर्म की विशेष पूजा अर्चना भक्ति भाव से की गई। जिसमें जैन संगीतकार एवं गायक विमल जौंला ने एक से बढ़कर एक भजनों की प्रस्तुतियां दी जिस पर महावीर प्रसाद छाबड़ा बंटी कठमाणा शकुंतला छाबड़ा पिंकी कठमाणा शशी सोगानी नीरा जैन रिंकी मोठूका महेश मोठूका नेमीचंद सिरस प्रेमचंद गिन्दोडी अशोक सिरस महावीर प्रसाद माधोराजपुरा प्रदीप जैन लालचंद बेणीप्रसाद झिराणा सहित अनेक श्रद्धालुओं ने भक्ति नृत्य किया। मीडिया प्रभारी विमल जौंला एवं त्रिलोक रजवास ने बताया कि सांयकाल शांतिसागर पाठशाला के बालक बालिकाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी, दीप प्रज्जवलन सुरेश कुमार श्रीमती छुट्टन देवी जैन ने किया एवं सीमा जैन एवं मीनाक्षी जैन ने संचालन किया। इस अवसर पर मुनि श्री अनुसरण सागर महाराज ने संयम और आत्मसाधना का महापर्व बताया एवं दशलक्षण धर्म उत्तम मार्दव धर्म पर सम्बोधित किया। इस दौरान जैन समाज के मंत्री महावीर प्रसाद पराणा त्रिलोक सिरस सुशील गिन्दोडी पवन बोहरा महेन्द्र कठमाणा धर्मचंद नेहरू सुनील जैन जीतेन्द्र जैन प्रेमचंद गिन्दोडी महावीर प्रसाद छाबड़ा महिला मण्डल अध्यक्ष शशी सोगानी मंत्री शकुंतला छाबड़ा उर्मिला सोगानी संजू जौंला ने मुनि श्री अनुसरण सागर महाराज के श्री फल चढ़ाकर आशीर्वाद लिया।

खोरा बिसल में दसलक्षण पर्व पर अनेक आयोजन हुए

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर खोरा बिसल मे, दसलक्षण पर्व के पावन अवसर पर नित्य धार्मिक आयोजन हो रहे है, जिसमे सुबह समाज द्वारा भगवान के अभिषेक और शांतिधारा बड़े भावो से की जा रही है। अध्यक्ष पदम चंद के अनुसार, उत्तम मार्धव धर्म के शुभ अवसर पर शांतिधारा और अभिषेक करने का सौभाग्य निहाल चंद और उनके पुत्र, पौत्र अमर चंद दीवान, नेमी दीवान, शुभम, अंशुल, रचित, नैतिक जैन को प्राप्त हुआ। महामंत्री अमर चंद दीवान के अनुसार शाम को नित्य भगवान की महाआरती, और भक्तामर के पाठ, उसी सौभाग्यशाली परिवार को मिलता है जिसमे महिलाए बच्चे सहित, सभी भगवान के समक्ष द्वीप प्रज्वलित करके अपने आपको धन्य मानते है।

अपनी शक्ति,धन,दान का सबका घमंड नहीं करना : उत्तम मार्दव धर्म

इंद्र एवं इंद्राणी ने की दशलक्षण महामंडल विधान की आराधना

टोंक. शाबाश इंडिया। त्याग,तपस्या साधना, आत्मा को शुद्ध करने वाला दशलक्षण महापर्व के तहत दूसरे दिन श्री दिगंबर जैन नसिया में प्रातकाल अभिषेक, शांतिधारा के पश्चात दशलक्षण महामंडल विधान में इंद्र और इंद्राणी द्वारा नित्य नियम पूजन के पश्चात दशलक्षण महामंडल विधान की पूजा अर्चना की बालाचार्य निपूर्ण नंदी जी महाराज के ससंघ सानिध्य मे पंडित मनोज जी शास्त्री के सानिध्य संगीतकार के सानिध्य में 18 अर्घ समर्पित की है। निपूर्णनन्दी जी महाराज ने उत्तम मार्दव धर्म के बारे में बताते हुए कहा मान कषाय के अभाव का नाम ही उत्तम मार्दव धर्म है अपनी शक्ति, धन ,दान का घमंड नहीं करना, मन के भाव को निर्मल रखना और अपने अभिमान और घमंड को खत्म करना मार्दव धर्म कहलाता हैं संस्कार शिविर के अंदर शिवरात्रियों ने प्रातः काल उठकर योग और ध्यान कर रहे हैं प्रतिक्रमण और सामयिक के द्वारा अपने जीवन को सफल बना रहे हैं नित्य अपने घर से दूर सभी मोह माया से दूर रहकर अपनी चर्या का पालन कर रहे हैं। सायंकालीन प्रतिदिन आरती प्रशन मंच, शास्त्र ज्ञान स्वाध्याय प्रतिदिन आयोजित हो रहे हैं, महिला मंडल के द्वारा प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं।

मिच्छामी दुक्कड़म

आओ मिटाए जाति, धर्म का भेद,
अपनी गलतियों पर व्यक्त करें खेद।
ये दो शब्द ₹मिच्छामी दुक्कड़म₹
विशेष हैं सभी को याद रहे हरदम।
जब शब्दों, कर्मों या विचारों से,
हुई हो किसी भी प्रकार की पीड़ा।
गलती से भी पैरों में आकर,
अस्तित्व से मिट गया हो कोई कीड़ा।
इस पवित्र अवसर पर हृदय से,
उन सभी से क्षमा मांग उठाओं बिड़ा।
करो त्याग अहंकार की भावना,
कर लो सच्चे मन से क्षमा की कामना।
सच्ची शांति और सुख संभव तभी,
करों एक-दूजे को क्षमा का साहस सभी।
दिलों में प्रेम और करुणा का हो भाव,
जलाओ ज्योत प्रेम की हर-घर में हो छांव।

संजय एम. तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
31, संजय नगर, इंदौर (मध्यप्रदेश)
98260-25986

वेद ज्ञान

अवसर पारस पत्थर की भांति

अवसर जीवन का दुर्लभ सत्य है। बिना अवसर पाए योग्यता अयोग्यता बनकर मूक रहती है। अवसर साकार करके जीवन की दिशा दशा बदली जाती है। समय पर सामने आते अवसर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष होते हैं। कुछ अवसर स्वयं हमारे पास आते हैं कुछ खोजे जाते है। कोई अवसर तलाशता है, किसी को अवसर तलाशता है। सामान्य पत्थर साधारण व्यक्ति के लिए मामूली है, जौहरी के लिए बहुमूल्य हीरा। जौहरी के परखने से वंचित हीरा सामान्य लोगों द्वारा सामान्य पत्थर की भांति फेंका जाता है। सही मूल्यांकन की नीर-क्षीर की दृष्टि के बिना अवसर निरर्थक हो जाते हैं। बार-बार की अनदेखी घातक है। साग बेचने वाली एक स्त्री हीरे को पत्थर जानकर बाट बनाकर बाजार में बैठी थी। एक जौहरी दृष्टि उस पर पड़ी। सब्जी खरीदने के बाद जौहरी ने बाट का नाममात्र का मूल्य देकर खरीद लिया। कम पैसे में दुर्लभ हीरा ठग कर वह शाम को अपने घर तिजोरी में रखकर प्रसन्नता में सो गया। प्रातः जब अपनी पत्नी को दिखाने के लिए तिजोरी खोली तो हीरा टूटा मिला। जौहरी के दुखी होने पर हीरे ने कहा आपने जानबूझकर इतना कम मूल्य मेरी मालकिन को देकर मूल्यांकन का सही अवसर गंवाया, मुझे लौटा आइए। अवसर सदा अमूल्य होता है, नर को नारायण बनाता है। इसकी कोई तुलना नहीं है। सही अवसर सफलता का शिखर देता है अवसर रंक से राजा, बिना अवसर राजा को रंक बनाता है। अवसर सीढ़ी की भांति उठाता गिराता है। समय का हर पल एक अवसर जिसे पहचानने के लिए जौहरी दृष्टि आवश्यक है। अवसर का श्रेष्ठ उपयोग सामान्य से विशिष्ट बनाता है। अवसर किसी खास समय विशेष फल देकर समय का पर्याय बनता है। अवसर पारस पत्थर की भांति लोहे जैसे मानव जीवन को स्वर्ण सा तपाकर चमकाता है। धैर्य से शाश्वत शिलालेख में नाम अंकित कराता है। अवसर पहचानने में समय परख अनिवार्य है, शिखर पर बैठा कौआ गरुड़ नहीं बनता पर बैठते ही गरुड़ कहलाने लगता है। कछुए को लक्ष्य जूझ कर मिलता है। विशिष्ट अवसर ऐसे नहीं आते और न ही इनका लाभ सामान्य लोग पाते हैं। बिना योग्यता क्षमता के इनका उपयोग असंभव है। उच्च योग्यता विकसित कर कठिनाइयों से जूझते हुए उनका सामना करना पड़ता है।

संपादकीय

हिंसा रोकने में सरकार की नाकामी पर सवाल

मणिपुर का संघर्ष अब गृहयुद्ध जैसी स्थिति में पहुंच चुका है। वहां के मैतेई और कुकी समुदायों के कथित आतंकी संगठन न केवल लक्षित हिंसा, बल्कि अत्याधुनिक तकनीक और उपकरणों का उपयोग करने लगे हैं। पिछले हफ्ते हुए दो हमलों में ड्रोन और राकेट का उपयोग किया गया। इंफल पश्चिम में ड्रोन से बम गिरा कर तीन लोगों की हत्या कर दी गई थी। विष्णुपुर में एक व्यक्ति के घर में घुस कर उसकी हत्या कर दी गई। उसके

बाद दोनों गुटों में जम कर गोलीबारी हुई। राकेट से गोले दागे गए, जिसमें चार लोग मारे गए और दो भवन ध्वस्त हो गए। इस घटना के बाद वहां के मुख्यमंत्री ने वही अपना रटा-रटाया बयान दे दिया कि हिंसा करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। यह बात समझ से परे है कि एक राज्य में हिंसा होते सवा साल से ऊपर हो गए, मगर सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी दिखती है। आखिर कोई भी जिम्मेदार सरकार कैसे इस तरह अपने नागरिकों को आपस में लड़-भिड़ कर मरते, विस्थापित होते और बुनियादी सुविधाओं तक से वंचित रहते देख सकती है। ऐसा कैसे संभव हो सका कि मणिपुर के उग्रवादी संगठन इतने ताकतवर होते गए कि उनके पास अत्याधुनिक हथियार पहुंचने लगे और सरकार उन पर रोक लगाने में विफल साबित होती रही। इंफल पश्चिम की घटना के बाद मुख्यमंत्री ने संकल्प लिया था कि वे किसी भी चरमपंथी संगठन को राष्ट्रविरोधी और कट्टरपंथी गतिविधियां नहीं करने देंगे। इसके पहले हर घटना के बाद वे दोहराते रहे हैं कि हिंसा को रोकने के लिए सरकार हर संभव कदम उठा रही है। मगर उनके उठाए कदमों के नतीजे प्रकट रूप में तो किसी को नजर नहीं आ रहे। यह नहीं माना जा सकता कि सरकार को उन इलाकों की पहचान नहीं है, जहां चरमपंथी संगठन अधिक सक्रिय हैं। फिर वह उन इलाकों में निगरानी और सख्ती क्यों नहीं बढ़ा पाती। विष्णुपुर में सबसे अधिक हिंसा हो रही है। फिर सरकार ने वहां क्यों सुरक्षाबलों की तैनाती नहीं बढ़ाई। क्यों वहां चरमपंथी संगठन एक-दूसरे पर गोलीबारी शुरू कर देते हैं। अगर उनके खिलाफ सख्ती बरती गई होती, तो उनमें इतना साहस नहीं पैदा होता कि वे राकेट से गोले दागें। मणिपुर की हिंसा को लेकर दुनिया भर में देश की किरकिरी हो चुकी है, इसके बावजूद अगर सरकार इस पर काबू पाने का प्रयास करती नहीं दिख रही, तो स्वाभाविक ही उसकी मंशा पर सवाल खड़े होते हैं। सवाल यह भी बना हुआ है कि आखिर मणिपुर पर केंद्र सरकार की चुप्पी का राज क्या है। अगर वहां के मुख्यमंत्री हिंसा रोक पाने में अक्षम हैं, तो उन्हें बदल देने में उसे संकोच क्यों होना चाहिए। चुनावी रणनीति के तहत भाजपा कई राज्यों में कई बार अपने मुख्यमंत्री बदल चुकी है, फिर मणिपुर के मुख्यमंत्री से इतना मोह क्यों। मणिपुर की हिंसा को लेकर प्रधानमंत्री तक पर सवाल उठते रहे हैं कि आखिर वे चुप क्यों हैं। वे रूस-यूक्रेन युद्ध रुकवाने को सक्रिय हो सकते हैं, तो मणिपुर की हिंसा को लेकर कोई पहल क्यों नहीं करते। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

संवाद और सहयोग

कुछ वर्ष पहले तक दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन यानी दक्षेस या सार्क के तहत इसमें शामिल देशों के बीच आपसी साझेदारी से लेकर वैश्विक मसलों पर रुख तय करने की समझ बनती थी। मगर पिछले कुछ वर्षों के दौरान दक्षिण एशियाई देशों के बीच कूटनीतिक और अन्य मसलों पर जैसे हालात पैदा हुए हैं, उसमें धीरे-धीरे एक तरह की अघोषित दूरी बनती गई। नतीजा यह हुआ कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाले उतार-चढ़ाव में एक अहम भूमिका निभाने वाला दक्षेस करीब एक दशक से निष्क्रिय पड़ा हुआ है। समस्या यह पैदा हुई है कि इसमें शामिल देशों में अगर कोई बड़ी समस्या भी खड़ी हो जाती है तो अब आपसी सहभागिता से कोई हल निकालने या उसमें मदद करने की गुंजाइश लगभग ठप पड़ गई है। जबकि पड़ोसी देशों के बीच अच्छे संबंध या कूटनीतिक स्तर पर एक परिपक्व समझदारी कायम हो, तो किसी जटिल समस्या के समाधान की राह खोजने में मदद मिलती है। शायद इसी को ध्यान में रखते हुए बांग्लादेश में व्यापक उथल-पुथल के बाद गठित अंतरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस ने कहा है कि दक्षिण एशियाई सहयोग संगठन के मकसद को बहाल करने से कई क्षेत्रीय समस्याओं का हल निकालने का रास्ता आसान हो जाएगा। इस क्षेत्रीय समूह में भारत और बांग्लादेश के साथ-साथ अफगानिस्तान, भूटान, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका शामिल हैं। पहले इसकी बैठकों में इन देशों में उपजी समस्याओं और उनकी जटिलताओं पर बातचीत होती थी। मगर इस बीच भारत और पाकिस्तान के बीच विवाद का असर इस संगठन पर भी पड़ा और दक्षेस की बैठक एक तरह से ठप पड़ गई। दक्षेस को फिर से जिंदा करने की बांग्लादेश की ताजा इच्छा से इतर पिछले कुछ समय से नेपाल भी इसे सक्रिय करने की कोशिश कर रहा है। इसमें कोई दो राय नहीं कि क्षेत्रीय स्तर पर

उभरने वाली परिस्थितियों के हल में दक्षेस की मजबूत भूमिका हो सकती है, क्योंकि संवाद और विमर्श किसी समस्या के हल का सबसे कारगर औजार होता है। नए बनते वैश्विक हालात में दक्षेस को पुनर्जीवित करना निस्संदेह वक्त की जरूरत है।

विनय मोक्ष का द्वार हैं उत्तम मार्दव धर्म : गुरुमां विज्ञाश्री माताजी

गुंसी, निवाई. शाबाश इंडिया

परम पूज्य भारत गौरव गणिनी आर्यिका गुरुमां विज्ञाश्री माताजी ससंघ सान्निध्य में श्री दि जैन अतिशय क्षेत्र सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुन्सी राजस्थान में पर्युषण महापर्व पर आज दूसरे दिन उत्तम मार्दव धर्म की पूजन की गई। प्रभु भक्तों ने मिलकर मण्डल पर 11 अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भावों के साथ विधान रचाया। आज के विधान पुण्यार्जक परिवार रविन्द्र सुनीता छाबड़ा सवाई माधोपुर एवं पद्मचंद पाटनी विवेक विहार जयपुर थे। गुरु मां के श्री मुख से शांतिधारा करने का सौभाग्य प्रमोद जैन आगरा सपरिवार ने प्राप्त किया। तत्पश्चात शंकरलाल टोंक एवं मोहनलाल चंवरियां सपरिवार ने मिलकर 48 दीपकों से भक्तामर दीपार्चना संपन्न की। पूज्य माताजी ने प्रवचन देते हुए कहां कि-उत्तम मार्दव धर्म जीवन में नम्र होने की शिक्षा देता है। जो जितना झुकता है उतना ही ऊपर उठता है। जैसे कुएं में बाल्टी जितनी झुकेगी उतनी ही पानी से लबालब भरकर के ऊपर आती है। वैसे ही जीवन में नम्र होना अपने सारे गुणों को लबालब भरकर ऊपर उठाता है। कहां भी है विनय ही मोक्ष का द्वार है।

उत्तम मादव धर्म मृदुता या नम्रता श्रेष्ठ धर्म: पवित्र मति माताजी

सुरेश चंद्र गांधी. शाबाश इंडिया

नौगामा जिला बांसवाड़ा। 10 लक्षण महापर्व के दूसरे दिन आज पवित्रमति माताजी के सानिध्य में वागड़ के बड़े बाबा आदिनाथ नेमिनाथ व 1008 भगवान महावीर समवशरण मंदिर मैं शांति धारा अभिषेक हुआ अभिषेक के बाद चातुर्मास पंडाल में विराजमान श्री जी की प्रतिमा का अभिषेक किया गया अभिषेक करने का प्रथम सौभाग्य नानावटी श्रीपाल बदामीलाल को प्राप्त हुआ इस अवसर पर आर्यिका पवित्रमति माताजी के सानिध्य व मुंगावली से पधारे मोनु भैया और रमेश चंद्र गांधी के दिशा निर्देशन में भगवान नेमिनाथ का विधान के अध बड़े भक्ति भाव से पुरुष एवं महिला द्वारा गरबा नृत्य करते हुए अघ चढ़ाए गए एवं साथ ही 10 लक्षण विधान के अर्ध चढ़ाएंगे साथ ही 10 लक्षण की पूजन, 16 कारण पूजन सरस्वती पूजन की गई। इस अवसर पर महिलाएं केसरिया वस्त्रौ में एवं पुरुष सफेद वस्त्रो में विधान में शामिल थे । आज मादव धर्म पर अपनी प्रवचन में कहां की मादव का अर्थ है मृदुता या नम्रता हमें मृदुता से जीवन जीना है दोपहर में सरस्वती विधान एवं तत्वार्थ सूत्र का वचन हुआ वउनका अर्थ बताया गया शाम को आचार्य भक्ति प्रतिक्रमण आरती के बाद राशि दीदी द्वारा प्रवचन किए गए एवं जैन पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए अभी 10 लक्षण के उपलक्ष में यहां संस्कार शिविर चल रहा है जिसमें आज शिविरार्थी द्वारा उपवास किए जा रहे हैं एवं अन्य धर्म प्रेमी बंधुओ द्वारा 5,10 ,16 उपवास चल रहे हैं।

बंगीय हिंदी परिषद में सम्मान समारोह एवं स्थापना दिवस का हुआ आयोजन

कोलकाता. शाबाश इंडिया

कोलकाता की प्रख्यात साहित्यिक संस्था बंगीय हिंदी परिषद द्वारा दो सत्रों में भारतेंदु जयंती, परिषद स्थापना दिवस, सम्मान समारोह एवं कविकल्प का भव्य आयोजन किया गया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता परिषद के अध्यक्ष प्रियंकर पालीवाल ने तथा दूसरे सत्र की महानगर के जाने- माने गजलकार नंदलाल रौशन ने की। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. सत्यप्रकाश तिवारी उपस्थित थें। स्वागत वक्तव्य में परिषद के मंत्री डॉ. राजेन्द्र नाथ त्रिपाठी जी ने समस्त श्रोताओं एवं वक्ताओं का स्वागत करते हुए भारतेंदु से जुड़े गंभीर तथ्यों को सामने रखा, साथ ही सद्भाव, एकता, एवं भाईचारा जैसे मूल्यों पर चलने की सलाह दी। उक्त अवसर पर सैकड़ों सुधि जन की उपस्थिति में साहित्य एवं शिक्षा को समर्पित तीन महान विभूतियों यथा- नूर मोहम्मद नूर, चंद्रिका प्रसाद पांडेय 'अनुरागी', राम पुकार सिंह 'पुकार गाजीपुरी' को संस्था के वरिष्ठ पदाधिकारियों द्वारा श्रीफल, शाल, मोमेंटो, सम्मान पत्र और नकद धनराशि दे कर क्रमशः आचार्य ललिता प्रसाद सुकुल सम्मान, आचार्य विष्णुकांत शास्त्री सम्मान एवं प्रोफेसर रामनाथ तिवारी सम्मान से सम्मानित किया गया।

उत्तम मार्दवः मृदुता का भाव ही मार्दव है, जिसके पालन से तीर्थंकर भगवान के उपदेशों को पाना आसान है

सीकर. शाबाश इंडिया। दशलक्षण पर्व के 10 दिनों के 10 नियम हैं जिनका अलग-अलग महत्व है। इन 10 दिनों के दस धर्मों को तत्वार्थ सूत्र के अनुसार उत्तम धर्म व मोक्ष प्राप्ति का उत्तम मार्ग बताया गया है। दस लक्षण पर्व के दूसरे दिन उत्तम मार्दव धर्म का पालन किया जाता है। यह धर्म हमें हमारे मन की मलीनता को खत्म कर जीवन को सुगंधित करने की सीख देता करता है। जिस प्रकार चंदन को अच्छी तरह से घिसने के बाद ही उसे भगवान पर लगाया जाता है फिर माथे पर तिलक लगाते हैं, उसी तरह उत्तम मार्दव धर्म मनुष्य को अपने भीतर के क्रोध कषाय, छल-कपट आदि को खत्म कर चंदन की तरह सुगंधित जीवन जीने का ज्ञान देता है।

दस व्रतों के पालन से मनुष्य 5 इंद्रियों को वश में कर मोक्ष मार्ग पर पहुंच सकता है: नया मंदिर के अध्यक्ष गोपाल काला मंत्री पवन छाबड़ा ने बताया कि दशलक्षण पर्व की द्वितीय दिवस पर उत्तम मादैव धर्म के अनुसार मृदुता का भाव ही मार्दव है। मनुष्य अपने जीवन से आठ तरह के मद का त्याग करे, तभी उसके जीवन में सम्यक दर्शन की प्राप्ति संभव है। इन आठ मदों में ज्ञानम, पूनाम, कुलम, जातिम, बलम, वृद्धिम, तप, बपु शामिल हैं। ज्ञान के मद का त्याग, पूजनीय होने के अभिमान का त्याग, बड़े कुल के होने के धर्मड का त्याग, बलवान होने के अभिमान का त्याग, धन-सम्पति के अभिमान का त्याग, तपस्वी होने के अभिमान का त्याग और किसी भी अन्य से ज्यादा सुंदर व स्वस्थ शरीर होने के अभिमान का त्याग करना ही उत्तम मार्दव धर्म है। कोषाध्यक्ष विनोद संगही प्रियंक जैन ने बताया की सीकर के बजाज रोड स्थित नया जैन मंदिर में प्रातः कालीन अभिषेक शांतिधारा करने का सौभाग्य बाबूलाल आवेश अजय मौलिक छाबड़ा मुड़वाड़ा परिवार को मिला पंडित जयन्त कुमार शास्त्री के द्वारा हर्षोल्लास के साथ समस्त धार्मिक क्रियाएं सम्पन्न की गई और दोपहर तत्वार्थ सूत्र विवेचन और संध्याकालीन प्रवचन दसलक्षण पर्व पर दिए।

संगीत कलाकारों के लिए जेमिंग और रिकॉर्डिंग की सारी सुविधाएं जुटाई है, वीरम स्टूडियो में

संगीत जगत की हस्तियों ने किया शुभारंभ

जयपुर. शाबाश इंडिया

टोंक रोड, सांगानेर एयरपोर्ट के सामने, सीताबाड़ी क्षेत्र की पेंटर्स कॉलोनी में एक अत्याधुनिक जैमिंग और म्यूजिक रिकॉर्डिंग स्टूडियो के उद्घाटन के अवसर पर संगीत जगत की दिग्गज हस्तिया उपस्थित रही। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध गायक डॉ. गौरव जैन, जावेद हुसैन, रोहित शर्मा और अंजलि वर्मा जैसे नामचीन कलाकार मौजूद थे। इसके अलावा जैन समाज के जाने-माने व्यक्तिव राकेश गोधा, ऋषभ एडवरटाइजिंग के राजकुमार बेद, और जैन सोशल ग्रुप गोल्ड के निवर्तमान अध्यक्ष सुरेंद्र पाटनी भी उपस्थित थे। स्टूडियो के संस्थापक अंताक्षरी क्वीन रतिका मितेन्द्र

जैन ने बताया कि वीरम स्टूडियो में कलाकारों के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं, जिनमें रील शूट एरिया, फोटोशूट एरिया, प्रोडक्ट शूट एरिया और मेकअप रूम एरिया शामिल हैं। यह स्टूडियो संगीतकारों और कलाकारों को एक ऐसा प्रारूप प्रदान करता है जहां वे अपनी प्रतिभा को निखार सकें और अपने सपनों को साकार कर सकें। उपस्थित कलाकारों ने वीरम स्टूडियो की सराहना करते हुए गायक डॉ. गौरव जैन ने कहा, वीरम स्टूडियो एक ऐसा मंच है जो संगीतकारों को अपनी प्रतिभा को दिखाने का अवसर प्रदान करता है। गायक जावेद हुसैन ने कहा, वीरम स्टूडियो में सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं, जो कलाकारों को अपनी रचनाओं को सर्वश्रेष्ठ बनाने में मदद करेगा। गायक रोहित शर्मा ने कहा, वीरम स्टूडियो एक ऐसा स्थान है जहां कलाकार अपनी प्रतिभा को निखार सकते हैं और अपने सपनों को साकार कर सकते हैं। सिंगर अंजलि वर्मा ने कहा, वीरम स्टूडियो का उद्देश्य संगीतकारों को एक मंच प्रदान करना है जहां वे अपनी प्रतिभा को दिखा सकें। युवा समाजसेवी राकेश गोधा ने कहा, वीरम स्टूडियो एक ऐसा स्थान है जहां कलाकार अपनी प्रतिभा को निखार सकते हैं और अपने सपनों को साकार कर सकते हैं। वीरम स्टूडियो के संस्थापक रतिका मितेन्द्र जैन ने आगे बताया कि हमारा उद्देश्य संगीतकारों और कलाकारों को एक ऐसा मंच प्रदान करना है जहां वे अपनी प्रतिभा को निखार सकें और अपने सपनों को साकार कर सकें। हमें उम्मीद है कि वीरम स्टूडियो संगीत जगत में एक नए युग की शुरूआत करेगा। स्टूडियो टीम के सौरभ जैन, सिंगर शुभम जैन और फोटो शूट एक्सपर्ट दिव्यांश जैन ने बताया कि इस अवसर पर गायिका ममता शाह और ईशान जैन शाह ने नमोकार पाठ और भजनों की प्रस्तुति से माहौल को मंत्रमुग्ध कर दिया, ड्रमर संगतकार साजिद खान और उनकी टीम ने सभी सिंगर्स के साथ जैमिंग वर्क किया।

मिशन ग्रीन आई जी एन के तहत, गोपाल सेवा भाव समिति द्वारा पौधरोपण किया

जयपुर. शाबाश इंडिया

मिशन ग्रीन आई जी एन के तहत, गोपाल सेवा भाव समिति द्वारा इंदिरा गांधी नगर, जगतपुरा, जयपुर में वृक्षारोपण अभियान सतत रूप से चलाया जा रहा है। इसके अंतर्गत गणेश चतुर्थी के अवसर पर इंदिरा गांधी नगर (सेक्टर 5) में वृक्षारोपण कार्य किया गया, जिसमे नीम एवम आम के पौधों को मंत्रोचार कर लगाया गया एवम पर्यावरण संरक्षण पर जागरूकता हेतु चर्चा की गई। साथ ही इन पौधों की देख भाल हेतु भी संकल्प लिया गया। इस अवसर पर डॉ अशोक दुबे, सत्य नारायण गुप्ता,,डॉ नरेश शर्मा (जयपुर एजुकेशन सेंटर), कपिल पचौरी(कैफे हाउस, सेक्टर 5),पुनीत जैन,मनीष शर्मा, दीपक कराड़िया, इत्यादि सहित पर्यावरण प्रेमी उपस्थित रहे।

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन

मनीष विधार्थी। शाबाश इंडिया

सागर। जैन मिलन मकरोनिया क्षेत्र क्रमांक 10 के द्वारा भगवान महावीर स्वामी के 2550 वे निर्वाण महोत्सव अंतर्गत पर्यूषण महापर्व के अवसर पर 1008 श्री ऋषभनाथ देवस्थान मंदिर अंकुर कॉलोनी में धार्मिक कथा कहानीयो एवं महापुरुषों पर आधारित धार्मिक फैंसी ड्रेस का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने एक से बढ़कर एक अपनी धार्मिक प्रस्तुति फैंसी ड्रेस के माध्यम से प्रस्तुति दी। जिसमें श्रवण कुमार चंदन वाला नेमी राजुल का विवाह शाकाहार वृक्षारोपण अष्ट द्रव्य गंदोधक लगाने का तरीका एवं धार्मिक संस्कारों पर आधारित प्रस्तुतियां दी गई जिसमें 45 बच्चों ने भाग लिया सभी बच्चों को जैन मिलन की ओर से आकर्षित पुरस्कार वितरण किए गए। इस अवसर पर मुख्य रूप से वीर हीरालाल जैन मार्गदर्शन एवं मंदिर अध्यक्ष, वीर सुरेश जैन अध्यक्ष, वीर रविंद्र जैन मंत्री, वीर निशिकांत सिंघई प्रचार मंत्री,वीर हेमचंद जैन कार्यकारी अध्यक्ष,अतिवीर अरुण जैन चंदेरिया क्षेत्रीय अध्यक्ष, वीर संजय जैन क्षेत्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, वीर डालचंद जैन राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, अति वीर महेश जैन राष्ट्रीय संयोजक, वीर संतोष जैन संयुक्त मंत्री,वीर अरुण जैन घुवारा, वीर सुमित जैन महावीर ट्रांसपोर्ट, डॉ.अखिलेश जैन, वीर सुमित प्रकाश जैन प्राचार्य, वीर अनुपम जैन,वीर महेंद्र जैन, मुनीम साहब वीर वीरेंद्र प्रधान मार्गदर्शक, वीर संजय जैन कंट्रोल, वीर मनीष जैन विद्यार्थी क्षेत्रीय प्रचार मंत्री, वीरांगना मणी जैन, आकांक्षा जैन रीता जैन,रश्मि जैन मुख्य रूप से उपस्थित थे कार्यक्रम का संचालन वीरांगना रश्मि जैन शिक्षिका द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में वीर रविंद्र जैन मंत्री वीर निशिकांत सिंघई एवं संतोष जैन गढ़ाकोटा द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

भगवान सुपार्श्वनाथ स्वामी की हुई विशेष पूजन

सनावद. शाबाश इंडिया

श्री सुपार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में दशलक्षण पर्व के दूसरे दिन सोमवार को प्रातः 6 बजे सामूहिक जलाभिषेक, शांति धारा पूज्य आर्यिका सरस्वती माता जी ने संपन्न कराई। निलेश बाकलीवाल एवं नरेश पाटनी ने महाभिषेक किया। डॉ. नरेन्द्र जैन भारती ने बताया कि नित्य पूजा, भगवान चंद्रप्रभु, सोलहकारण, पंचमेरु दशलक्षण पूजन के साथ मंदिर के मूल नायक, जैन धर्म के सातवें तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ स्वामी का भाद्रपद शुक्ल अष्टमी के दिन गर्भकल्याणक दिवस होने के कारण सत्येंद्र जैन, संतोष बाकलीवाल, राजेश चौधरी, राकेश जैन, शैलेंद्र जैन जंगलेश जैन, आशीष पाटनी, प्रियम जैन, शुभम जैन, निलेश पाटनी, कमलेश भूच, मनीष जैन, धीरेंद्र बाकलीवाल ने विशेष पूजन कर भक्ति समर्पित की। डॉ. भारती ने बताया कि तीर्थंकर परमात्मा श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी काशी के राजा सुप्रतिष्ठ की रानी पृथ्वीषेणा के गर्भ में आते है। तब गर्भवतारण को निकट जान कुबेर ने राजमहल

में रत्नों की वर्षा कर भगवान के गर्भवतारण की सूचना इंद्र आदि को दी। तब इंद्रो ने आकर भगवान सुपार्श्वनाथ स्वामी का गर्भकल्याणक मनाकर हर्ष व्यक्त किया। तभी से आज के दिन श्रद्धालु जन भक्ति भाव से भगवान सुपार्श्वनाथ स्वामी की विशेष पूजन कर उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हैं। आदिनाथ जिनालय में भी श्रद्धालुओं ने अभिषेक पूजन कर दशलक्षण पर्व में पुण्यार्जन किया।

फीडे मास्टर गर्व गौर बने चैंपियन

जयपुर। स्थित एस एम एस इंडोर स्टेडियम में SARK INDIA एवं चेस पेरेंट्स एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे 2 दिवसीय ओपन इंटरनेशनल रैपिड फीडे.रेटेड चेस टूर्नामेंट आज हुआ समापन ।टूर्नामेंट डायरेक्टर ऋषि कौशिक ने बताया की प्रतियोगिता में 334 शातिरों ने भाग लिया और प्रतियोगिता का खिताब हरियाणा के युवा शातिर फीड़े मास्टर गर्व गौर ने 8 अंक अर्जित कर अपने नाम किया। विजेता स्वरूप गर्व गौर ने शानदार ट्रॉफी एवं 41,000 नकद जीते। प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान पर हरियाणा के ही अंतराष्ट्रीय मास्टर आदित्य ढींगरा, तृतीय स्थान पर गुजरात के अनादकत कर्तव्य और चतुर्थ स्थान पर कोलकाता के ग्रैंड मास्टर सप्तऋषि राय चौधरी रहे। सुमित मोदी (CHAIRMAN- SARK INDIA) ने सभी विजेताओं को ट्रॉफी एवं नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया ।प्रतियोगिता के आयोजन सचिव अमित गुप्ता ने बताया कि नारायण जोशी, हरिओम सोलंकी, होनी अरोड़ा, गर्वित शर्मा, आशी उपाध्याय, तुषार गुप्ता अर्जुन कटारिया विक्रमादित्य मुखीजा, बिफोर अटल , अविभव कुमार, सिद्धांत राणा येदांत सिंह जमवाल, आर्य जेमन, यशा कालवानी, नितेश अग्रवाल, आरोही शर्मा, वंशिका रावत भी भिन्न-भिन्न कैटिगरीज में चैंपियन बने ।चेस पेरेंट्स एसोसिएशन के सचिव डॉ ललित बराडिया ने बताया कि प्रतियोगिता के दौरान महावीर इंटरनेशनल पिंकसिटी चैरिटेबल ट्रस्ट के चेयरमैन राजीव जैन एवं CPA कोषाध्यक्ष राजेंद्र अरोड़ा के सहयोग से एसएमएस स्टेडियम में खिलाड़ियों एवं अभिभावकों ने 250 पेड़ लगाकर प्रकृति बचाओ का संदेश दिया ।CPA मीडिया प्रभारी जिनेश कुमार जैन ने बताया कि राजस्थान में बच्चों के नामी अस्पताल Neo clinic Jaipur की ओर से फर्स्ट एड, ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर इत्यादि की निशुल्क सुविधा खिलाड़ियों और अभिभावकों को दी गई। अंत में राष्ट्रगान करके टूर्नामेंट का समापन किया गया।

कड़िया कर्मों की झांकी के पोस्टर का विमोचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। महावीर नगर जैन समाज की ओर से आगामी 13 सितंबर को सुगंध दशमी के अवसर पर श्री महावीर युवा मंडल महावीर नगर द्वारा जैन भवन में भव्य झांकी का पोस्टर विमोचन आज जयपुर की सांसद श्रीमती मंजू शर्मा के द्वारा उनके निवास पर किया गया इस अवसर पर मंदिर की कमेटी के मंत्री सुनील बज युवा मंडल के अध्यक्ष प्रशांत जैन, सोमिल ठोलिया, मनीष पांडया, दर्शित पाटनी,महिला मंडल की अध्यक्ष सुशीला गोदिका, मंत्री रीना पांड्या, पार्षद नीरज अग्रवाल, मोहित लवीना पाटनी खानिया, मनोज स्मिता जैन उपस्थित रहे।

ये कैसा आखेट....

दो पैसे क्या शहर से, लाया अपने गाँव ।
धरती पर टिकते नहीं, अब ह्यसौरभह्न के पाँव।।

सपने सारे है पड़े, मोड़े अपने पेट ।
खेल रहा है वक्त भी, ये कैसा आखेट ।।

उलटे लटकोगे यहाँ, ज्यों लटका बेताल ।
अपने हक की बात पर, पूछे अगर सवाल ।।

हीरे-मोती मत दिखा, रख तू अपने साथ ।
सौदागर मैं प्यार का, चाहे तो कर हाथ ।।

नेह-स्नेह सूखे सभी, पाले बैठे बैर ।
अपने गर्दन काटते, देते कन्धा गैर ।

ह्यसौरभह्न मन गाता रहा, जिनके पावन गीत ।
अंत वही निकले सभी, वो दुश्मन के मीत ।।

ये भी कैसा दौर है, कैसे सोच-विचार ।
घड़ा कहे कुम्हार से, तेरा क्या उपकार ।।

-डॉ. सत्यवान सौरभ

जैन दस लक्षण धर्म विशेष

उत्तम आर्जव-त्यागें मिथ्याचार

विजय कुमार जैन राघौगढ़ (गुना)

जो जैसा है वैसा ही प्रकट करना नहीं चाहता। भीतर कुछ है, बाहर कुछ और दिखता है। व्यक्ति के जीवन में दोहरापन दिखाई पड़ता है, यह दोहरापन ही मायाचारी हैं यह ही निकृति है, कुटिलता है। इस कुटिलता के अभाव का नाम ही आर्जव धर्म है। उत्तम आर्जव का स्वरूप बताते हुए भगवती आराधना में कहा है - जो मन में हो उसे ही वाणी और व्यवहार में उतारना, मन-वन-काय से एक होना आर्जव धर्म है। इसके विपरीत कुटिलता अधर्म है। सरलता स्वर्ग का सोपान है तो कुटिलता नरक का पथ। जीवन के इस दोहरेपन को दूर करने का प्रयास करना चाहिये क्योंकि बहुरूपियापन व्यक्ति को कहीं का नहीं रहने देता। ऐसे व्यक्ति बहुत स्वार्थी होते हैं, अवसर को देखते ही अपना रूप बदल लेते हैं। ऐसे लोगों पर विश्वास नहीं किया जा सकता क्योंकि ये कब कैसा रूख अपना लें कहां जा नहीं सकता। मन, वचन और काय में एकरूपता महापुरूषों का लक्षण है तथा मन, वचन और काय की भिन्नता दुरात्मा की पहचान है। मन कुछ, वचन में कुछ, प्रकट में कुछ, ये कुटिलता दोहरापन है। इस दोहरेपन में खत्म करके मन, वचन, वाणी और व्यवहार में एकरूपता लाकर सरल बनने की आवश्यकता है। सरल बनने की बात बड़ी सरलता से सुनी और कहीं जा सकती है। सरलता सुनने समझने में जितनी सरल प्रतीत होती है, जीवन में उतारने में उतनी सरल नहीं है। कहा है सरल बन जाना कदाचित सरल है, पर सरल हो पाना बड़ा जटिल है। कुछ लोग सरल बनते हैं, कुछ दिखते है और कुछ वास्तव में सरल होते हैं। प्रयत्नपूर्वक स्वयं को सरल दिखाने वाले लोग इस संसार में बहुत है। किन्तु वास्तविक रूप में सरल हो जाने वाले लोग बहुत कम है। सरल वह है जिसके मन में सत्य के प्रति निष्ठा हो, जो सच्चाई के पथ पर चलने हेतु संकल्पित हो, जो ईमानदारी का जीवन जीने का आदी हो। शास्त्रों में चार प्रकार के लोग बताये गये हैं - (1) बाहर से सरल, भीतर से सरल प्रथम प्रकार के लोग अत्यंत सरल होते हैं। (2) बाहर से कुटिल भीतर से सरल दूसरे प्रकार के वे लोग है जो बाहर से कठोर और भीतर से सरल होते हैं। (3) बाहर से सरल और भीतर से कुटिल तीसरे प्रकार के मनुष्य वे होते हैं जो ऊपर से सरल दिखते है पर होते नहीं है। (4) बाहर भीतर से कुटिल चौथे प्रकार के व्यक्ति बाहर-भीतर से कुटिल होते हैं। कुटिलता उनकी नस-नस में भरी होती हैं वे कुटिलता की प्रति मूर्ति होते हैं। उनका जीवन बड़ा गूढ़ होता है। ऐसे लोग मरते-मरते भी कुटिलता नहीं छोड़ते। जैसे मदिरा का पात्र आग से तपाने पर भी शुद्ध नहीं होता, वैसे ही कुटिल हृदय व्यक्ति सौ बार तीर्थ स्नान करके भी शुद्ध नहीं होता। अतएव कुटिलता, मायाचारी और कपट पूर्ण व्यवहार से बचने का प्रयत्न करें। सरलता और सदाचार को अपने जीवन का आदर्श बनाकर चलें। तभी आत्म कल्याण होगा। यही उत्तम आर्जव है।

क्रोध से जीवन नष्ट होता है क्षमा सहनशीलता से जीवन का अच्छा निर्माण होता है : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

पारसोला, राजस्थान. शाबाश इंडिया

पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज 56 वे वर्षायोग हेतु पारसोला धरियावद तहसील विराजित है। पारसोला नगर में जैन समाज द्वारा प्रथमाचार्य श्री शांति सागर जी महाराज की नवनिर्मित प्रतिमा का नगर में भव्य जुलूस निकाला गया। जगह-जगह समाज द्वारा आचार्य श्री की प्रतिमा की मंगल आरती की गई। सन्मति भवन में आचार्य श्री ने धर्म देशना में बताया कि क्रोध के विपरीत क्षमा है, माता क्षमाशील होती है पृथ्वी सहनशील क्षमाशील है, माता भी दुख सहन करती है क्षमा सहनशीलता से दी जाती है क्षमा से जीवन का निर्माण करें अच्छे निर्माण से जीवन का निर्वाण होता है विषय भोगों के लिए आप निर्माण करते हैं जो कि गलत है जंगल की आग को दावानल कहते हैं इस फायर ब्रिगेड बुझाते हैं इसी प्रकार आत्मा में विषय भोग की आग को संयम साधना से बुझाया जाता है आपके रूप को कषाय विकृत करती है क्रोध शरीर को खराब करता है, क्रोध से हानि होती है, एक पल के क्रोध से भी संपूर्ण जीवन नष्ट हो जाता है, क्रोध से शरीर तंत्र खराब होता है, जीवन शक्ति भी क्रोध से कम होती है। यह प्रवचन वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ने दिगंबर जैन समाज द्वारा आयोजित धर्मसभा में दशलक्षण पर्व में उत्तमक्षमा धर्म की विवेचना करते हुए प्रकट की है। आचार्य श्री ने बताया कि मनुष्य का आभूषण रूप है, रूप का आभूषण गुण, गुण का आभूषण ज्ञान, ज्ञान का आभूषण क्षमा है। इसलिए क्षमा रुपी आभूषण धारण करने योग्य है। क्षमा वीरों का भूषण है, क्षमा धारण करने वाला व्यक्ति विष का नहीं, अमृत का पान करता है।

उत्तम मार्दव धर्मः श्रमण मुनि विशल्यसागर जी

अंहकार की सूक्ष्म कणिका हमारे जीवन को पतन की ओर ले जाती हैं। जीवन की सम्पूर्ण साधना को ये मिट्टी में मिला देवी है। आत्मा के उत्थान के कई बाधक कारणों में अंहकार को भी गर्भित किया है। बाहुबली को देखिए अपूर्व साधना के धनी, महाव्रत धारी चक्रवर्ती विभूतियों के त्यागी साधना की पराकाष्ठा थी, न भूख की चिन्ता, न प्यास की बाधा, पैरों में सर्पों ने बाम्मी बना ली, सिर में चिड़ियों ने घोंसला बना लिया, शरीर कृश हो रहा है, वर्ष बीत गए हैं, सूक्ष्ममान केवलज्ञान में बाधक बन गया। इसलिए तो आचार्या को आत्मानुशासन में कहना पड़ा - चक्र छोड़, दीक्षा ली, साधना की मान नहीं छोड़ा तो एक साल तक संसार में लटके रहें, भरत के सम्बोधन को सुना, मान से .मुक्त 'केवलज्ञान' के अधिकारी हुए। जरा सा अंहकार व्यक्ति को ज्ञानहीन, विवेक शून्य बना देता है, मेरे सामने उसकी क्या औकात बस उसी क्षय मान प्रगट होता है और अपने आप को छोटा बना लेता है और आप को छोटा बना लेता है, तो उसी क्षण संसार की समस्त सम्पदा चरणों में लौटने लगती। आपने देखा होगा घास मृदु एवं छोटी होती है। तूफान आने पर अपने को समर्पित कर देती है, पारिणाम स्वरूप सुरक्षित रहती है, वृक्ष अकड़ा रहता है फलस्वरूप जड़मूल से उखड़ जाता है। अंहकार में तना उखड़ जाता है। आप अपने मुख को देखिये दांत बाद में आते हैं पहले जाते हैं। वे हमें यहीं संदेश सुनाते हैं, अकड़ोगे जल्दी टूट जाओगे और जीभ जन्म से मृत्यु पर्यंत साथ है मृदुता का साथ सदा है। यह सरलता, यह मृदुता, यह झुकाव ही सुरक्षा का साधन है। मन के कचरे को बाहर निकालने के लिए झुकना आवश्यक है। पानी भरने वाले को देखिये, कुएँ से पानी निकालने वाला झुकता है तो कुएँ से पानी निकलता है। आत्मा से परमात्मा का 'सत्य का पानी निकालना है तो झुकना सीखें क्योंकि झुककर ही शिखरों की चढ़ाई चढ़ी जा सकती है। मौन समर्पण विन्रमता का भ्राता है। विन्रमता परमात्मा का आमन्त्रण है, इसलिये सदैव सरलता से झुकें कपट से नहीं। दुनियाँ में जहाँ भी 'द्वेष हैं, प्रतिष्ठा है, प्रतिस्पर्धा है, प्रदर्शन है वे सब अहंकार की देन है। मानी व्यक्ति तो सवेरे की परछाई होता है। छोटा होकर भी बड़ा साबित होना चाहता है पर विनयी दोपहर की परछाई होता है, बड़ा होकर भी छोटा दिखना चाहता है। विनयी न नाम की न मान की आकांक्षा करता है। यह अहंकार पाप का दाता है, दुःख है, संताप है, रोग है, महामारी है, ठगी है। मृदुता पुण्य है, सुख है, आराम है, तपस्या है, स्वास्थ्य है इसे पाने के लिए मृदुता को जन्म दें। विद्वानों ने कहा है विनय के द्वारा को स्वीकारे चीन की अहंकार की दीवार की नहीं। -**प्रेषक विशाल पाटनी**

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

जवाहर नगर संग में सिद्धि तप, मास खामण, आदि तपस्याओं का भव्य वरघोड़ा

जयपुर. शाबाश इंडिया

आचार्य प्रर्वर श्री विश्व रत्न सूरिजी महाराज साहब आदि ढाणाओ की निश्रा में महावीर साधना केंद्र पर सिद्धि तप, मास खामण एवं अठाइयों की भव्य तपस्या हुई। यहां पर पधारे हुए ढाई सौ आराधन कर्ताओं ने कोई ना कोई तपस्या करके अपने जीवन को धर्म के मार्ग पर

तत्पर किया। आराधको का वरघोड़ा संघ के अध्यक्ष श्री उम्मेद जी मुसल के निवास स्थान से रवाना होकर महावीर साधना केंद्र पहूचा। संघ अध्यक्ष मुसल साहब एवं उपाध्यक्ष विनोद संचेती मंत्री नितिन दुगड एवं सभी कार्यकारिणी सदस्यों ने सभी तपस्वियों को माला पहनकर अभिनंदन किया। आचार्य श्री ने संपूर्ण कार्यकारिणी एवं समस्त जवाहर नगर के श्रावक श्राविकाओं को आशीर्वाद दिया। बाहर से पधारे हुए तपस्वियों ने संघ की सेवाओं को

एवं कार्यकारिणी के सदस्यों की बहुत-बहुत अनुमोदना की।

उत्तम मार्दव दसलक्षण पर्व का दूसरा दिन

उत्तम मार्दव धर्म मनुष्य के मान और अहंकार का नाश करके उसकी विनयशीलता को दर्शाता है

अमित गोधा. शाबाश इंडिया

ब्यावर -दिगम्बर जैन समाज का दसलक्षण पर्व का आज दूसरा दिन है आज दिगम्बर जैन समाज के सभी मंदिर जी मे अभिषेक व शांतिधारा से शुरूआत हुई। आज श्री दिगम्बर जैन छावनी मंदिर जी मे पंडित अभिषेक शास्त्री के सानिध्य में श्री जी का अभिषेक व शांतिधारा करने का सौभाग्य अशोक कुमार उज्जवल पुष्प काला , पदम मनीष सोनी महेन्द्र सोनी सुशील गदिया पवन बड़जात्या संजय काला सुदेश पाटनी सुधीर पाटनी रूपचंद कासलीवाल परिवार को करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, इसके बाद सभी दिगम्बर जैन मंदिर जी मे पूजन पाठ श्रवाक व श्राविकाओं व बालक व बालिकाओं द्वारा पूजन की गई। दिन में सरावगी जैन मंदिर जी मे पंडित अभिषेक जी शास्त्री द्वारा तत्वार्थ सूत्र पर पाठ कराया गया है।

शाम को सभी जिनालयों में आरती की गई

श्री दिगंबर जैन पंचायत नसियाँ में पंडित अभिषेक जी शास्त्री ने उत्तम मार्दव धर्म पर प्रवचन किया गया है। मार्दव धर्म आत्मा अर्थात्निजात्मा स्व-स्वरूप का धर्म है। जहाँ मृदु भाव या नम्रता नहीं है वहाँ धर्म भी नहीं है। और वहाँ नियम, व्रत, तप, दान, पूजा इत्यादि जो मानव करता है विनय भाव के बिना सभी व्यर्थ गिनाया जाता है। और कहता है कि मैंने ऐसा किया जो भी किया मैंने किया अन्य कोई भी मेरे समान किया नहीं इस तरह कह कर जो मान कषाय करता है वह अपनी आत्मा को ठगता है और दुनियाँ को भी ठगाया समझना चाहिए। पडित जी द्वारा प्रश्नमंच का आयोजन किया गया उसमें प्रश्न के उत्तर देने वाले को रतनलाल केलाश चन्द बड़जात्या द्वारा इनाम देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

महासती मैना सुंदरी की नाटिका

दिगंबर जैन समाज के प्रवक्ता अमित गोधा ने बताया कि रात्रि में ज्ञानोदय बहु मंडल दारा महासती मैना सुंदरी की नाटिका सांस्कृतिक प्रोग्राम की प्रस्तुति की गई उसमें मेना सुंदरी का रोल पिंकी कासलीवाल पिता का कोपल फागीवाल मंत्री पुष्पलता जैन सुर सुंदरी निशा अजमेरा श्रीपाल में साक्षी सोनी दोस्त में श्वेता ठोलिया पंडित में इशिका गदिया ने भाग लिया। इसमे अध्यक्ष रीना ठोलिया उपाध्यक्ष सरोज गोधा सह मंत्री डिम्पल कासलीवाल सहित मंडल की सभी सदस्यगण उपस्थित थे। इस सांस्कृतिक प्रोग्राम में श्री दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष अशोक काला, मंत्री दिनेश अजमेरा उपाध्यक्ष विजय फागीवाला सह मंत्री विकल जैन कासलीवाल कोषाध्यक्ष शशि कांत गदिया सहित सकल जैन समाज के महिला पुरुष सदस्यगण उपस्थित थे कार्यक्रम के समापन पर राजकुमार चंदा यशोधर पहाड़ियाँ परिवार दारा पारितोषिक वितरण किया गया।

मान अभिमान का त्याग ही उत्तम मार्दव धर्म : आर्यिका संस्कृति माताजी

सुपार्श्वनाथ पार्क में दशलक्षण पर्व के दूसरे दन उत्तम मार्दव धर्म की आराधना

सुनील पाटनी। शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। आचार्य श्री सुंदर सागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में श्री महावीर दिगम्बर जैन सेवा समिति के तत्वावधान में दसलक्षण (पर्युषण) महापर्व की आराधना शहर के शास्त्रीनगर हाउसिंग बोर्ड स्थित सुपार्श्वनाथ पार्क में दूसरे दिन सोमवार को भी जारी रही। दशलक्षण महापर्व के दूसरे दिन उत्तम मार्दव धर्म की आराधना की गई। दस दिवसीय आराधना अनंत चतुर्दशी के पावन अवसर पर 17 सितम्बर को पूर्ण होगी। प्रवचन में आर्यिका संस्कृति माताजी ने कहा कि जो झुकना सीखाता है, जो मद को नाश करता है, जो अहंकार का विनाश करता है उसे मार्दव कहते है। मृदुता कोमलता का नाम मार्दव है। किसी भी प्रकार के मान या अभिमान को समाप्त करने का नाम मार्दव धर्म है। जो विनम्रता सिखाता है,जो नम्र होना सिखाता है,जो विनयशीलता लाता है उसे उत्तम मार्दव धर्म

कहते है। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति हर स्थिति में मार्दव गुण धारण करता है वह सदैव उन्नति की ओर अग्रसर होता है। जीवन में अभिमान का त्याग कर विनम्रमा धारण करने की प्रेरणा उत्तम मार्दव धर्म प्रदान करता है। सब मैं करता हूं यह सोचना अहंकार है। इसे छोड़कर नम्र होना मार्दव धर्म है। श्री महावीर दिगम्बर जैन सेवा समिति के अध्यक्ष राकेश पाटनी ने बताया कि दशलक्षण पर्व के दूसरे दिन सुपार्श्वनाथ मंदिर में मुख्य शांतिधारा का सौभाग्य सुशीला पाटनी परिवार ने लिया। सौधर्मेन्द्र का इन्द्र का सौभाग्य पदमलाल सुंदरदेवी सरावगी परिवार को प्राप्त मीडिया प्रभारी भागचंद पाटनी ने बताया कि दोपहर 2 बजे सरस्वती पूजा, तत्वार्थ सूत्र पूजा एवं वाचन हुआ। शाम को सामायिक एवं प्रतिक्रमण हुआ। ज्ञानवान महिला मण्डल की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भक्ति संगीत के साथ महाआरती का आयोजन हुआ। इसमें सैकड़ो श्रावक-श्राविकाओं ने दशलक्षण धर्म की पूजा आराधना की। महाआरती का सौभाग्य सुशीला पाटनी एवं पदमलाल सुंदरदेवी सरावगी को प्राप्त हुआ। दशलक्षण पर्व के तीसरे दिन उत्तम आर्जव धर्म की आराधना होगी। इस दौरान प्रतिदिन सुबह 5 बजे ध्यान, सुबह 6.15 बजे नित्य अभिषेक एवं शांतिधारा, सुबह 7.30 बजे से श्रीजी का पांडाल में आगमन, सुबह 7.45 बजे से संगीतमय पूजन एवं मंगल प्रवचन हो रहे है। आहारचर्या के बाद दोपहर 2 बजे से तत्वार्थसूत्र पूजन,सरस्वती पूजन व तत्वार्थ सूत्र वाचन किया जा रहा है। शाम 6 बजे से प्रतिक्रमण एवं सामायिक, शाम 7.15 बजे से श्रीजी की आरती एवं शाम 7.40 बजे से आचार्यश्री की भक्तिमय आरती की जा रही है।

उत्तम क्षमा धर्म के साथ शुरू हुए दिगंबर जैन समाज के दशलक्षण महापर्व

आगरा. शाबाश इंडिया। उत्तम क्षमा धर्म के साथ 8 सितंबर से दिगंबर जैन समाज के दशलक्षण महापर्व का शुभारंभ हुआ। सभी मंदिरों को भव्य सजाया गया। धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।बड़ी संख्या में श्रद्धालु मंदिरों में पूजन के लिए पहुंचे । मेडिटेशन गुरु उपाध्यायश्री विहसंत सागर जी महाराज ससंघ के मंगल सानिध्य एवं अर्पितमय में पावन वषायोग समिति समिति के तत्वाधान में आगरा के कमला नगर स्थित डी ब्लॉक के महावीर दिगंबर जैन मंदिर में दसलक्षण महापर्व का शुभारंभ हुआ। महापर्व के पहले दिन उत्तम क्षमा धर्म के रूप में मनाया गयो भक्तों ने प्रातः 6:00 बजे उपाध्याय श्री के मुखारविंद से उच्चारित मंत्रोच्चारण के साथ प्रभु का अभिषेक और शांतिधारा संपन्न की। प्रभु के अभिषेक के बाद भक्तों ने संगीतमय में उत्तम क्षमा धर्म की पूजन की मांगलिक कियाएं संपन्न कीं। उपाध्याय श्री विहसंत सागर जी महाराज ने भक्तों को उत्तम क्षमा धर्म के महत्व को संबोधित करते हुए बताया कि दो प्रकार के पर्व होते हैं एक लौकिक और एक आलौकिक लौकिक पर्व घटना आधारित होते हैं परन्तु आलोकिक पर्व कभी न मिटने वाले पर्व होते हैं जैसा यह पर्व उन्होंने बताया कि यह पर्व नवयुग के प्रारम्भ की अनुभूति कराता है यह आत्म जागरण का पर्व है यह निजानुभूति का पर्व है यह पर्व स्व निरिक्षण का पर्व है। इस अवसर पर प्रदीप जैन पीएनसी जगदीश प्रसाद जैन मनोज जैन बाकलीवाल, रोहित जैन, अहिंसा, यशपाल जैन, रूपेश जैन,अनुज जैन कांति,अनिल जैन नरेश जैन, शुभम जैन समस्त कमला नगर जैन समाज के लोग मौजूद रहे।

रिपोर्ट : शुभम जैन

शोक सन्देश/उठावना

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित करना पड रहा है कि पत्रकार स्व. श्री शांति लाल जी पाटनी के सुपुत्र एवं भैरू लाल, महावीर कुमार, राजकुमार राजेश के भ्राता श्री संजय कुमार पाटनी का आकस्मिक निधन दिनांक 08.09.2024 को हो गया। जिनका उठावना दिनांक 10.09.2024 मंगलवार को सांय 4.00 बजे राजुल वाटिका, टेम्पो स्टेन्ड के पास, सुभाष नगर, भीलवाड़ा पर रखा गया है।

नोट –सुसराल पक्ष का उठावना भी साथ रखा गया है।

शोकाकुल – सुरेश चन्द्र, सुनील कुमार, अनिल, मनीष, अभिषेक, राहुल, कशिश, उदित, युग, वर्षिल, आदिश, आर्जव, ईशान तीर्थ, प्रयान एवं समस्त पाटनी परिवार, भीलवाड़ा

निवास स्थान – जी–439, देव नारायण मन्दिर के पीछे, सुभाष नगर, भीलवाडा

फर्म– "पाटनी मिष्ठान भण्डार","पाटनी टेन्ट हाउस","भीलवाडा सम्राट साप्ताहिक"

सम्पर्क :– 9460811344, 9414858780

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, झोटवाड़ा में णमोकर एवम भक्ति संध्या का आयोजन हुआ

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, झोटवाड़ा में णमोकर एवम भक्ति संध्या का आयोजन हुआ। रविवार दिनाक 08 सितम्बर को मंदिरजी में प्रातः:- 5:15 बजे : अभिषेक एवं शांतिधारा प्रातः - 7:15 बजेः झंडारोहण, दीप प्रज्वलन हुआ। झंडारोहण एवं दीप प्रज्वलन कर्ता परिवार विमल कुमार पवन कुमार अक्षत कुमार एवं समस्त बाकलीवाल परिवार, सावरदा वाले थे। धर्मशाला के अउ हाल में प्रातः 6:15 बजे से 9:15 बजे तकः अभिषेक एवं शांतिधारा, दशलक्षणजी विधान मंडल पूजन सानिध्य : पंडित आदर्श जी जैन शास्त्री, सांय 6:15 बजे सामूहिक आरती सांय 6:30 बजे धार्मिक प्रवचन हुआ। पांडाल उद्घाटन कर्ता परिवार गुलाबचंद अशोक कुमार संजय बज परिवार सलाहदीपुरा वाले में सायं 8.00 बजे से : णमोकार मंत्र का जाप्य एवं भक्तिसंध्या गायक आदि जैन एवं श्रीमती नेहा काला एंड पार्टी द्वारा भव्यता से हुई।

आर्यिका सुप्रज्ञमति माताजी के पावन सानिध्य में दशलक्षण महापर्व पर दूसरे रोज उत्तम मार्दव धर्म की हुई पूजा अर्चना

फागी. शाबाश इंडिया। कस्बे में चातुर्मास के दौरान पार्श्वनाथ चैत्यालय में विराजमान सुप्रज्ञमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में सकल दिगम्बर जैन समाज फागी के सहयोग से आज दशलक्षण महापर्व के दूसरे दिन जिन सहस्त्रनाम विधान की पूजा अर्चना में सुख समृद्धि की कामना करते हुए उत्तम मार्दव धर्म की पूजा अर्चना की गई। अग्रवाल समाज के मंत्री कमलेश चोधरी एवं प्रचार मंत्री त्रिलोक जैन पीपलू ने बताया कि कार्यक्रम में प्रातः अभिषेक, महाशांति धारा बाद विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। कार्यक्रम में समाज सेवी कैलाश चंद ,सुरेंद्र कुमार ,मनोज कुमार ,राहुल कुमार जैन पंसारी परिवार ने सौ धर्म इंद्र बनने का सोभाग्य प्राप्त किया तथा श्री जी की महाशांति धारा करने का सोभाग्य भी प्राप्त कर सुख समृद्धि की कामना की गई ।कार्यक्रम में आर्यिका सुप्रज्ञमति माताजी ने अपने मंगलमय उद्बोधन में श्रावकों को सम्बोधित करते हुए उत्तम मार्दव धर्म की व्याख्या पर प्रकाश डाला और कहा कि आत्मा और मान कषाय के भेद को समझकर मान को छोड़ना मार्दव धर्म के गुण हैं। उत्तम मार्दव धर्म का मतलब है छोटा बनकर जीना, क्रोध एवं छल कपट से दूर रहना, अहंकार एवं अभिमान का त्याग करना ही उत्तम मार्दव धर्म है ।उक्त कार्यक्रम कपूर चंद नला,मोहनलाल झंडा,केलास कलवाडा,सोहनलाल झंडा, मोहनलाल चौधरी, कैलाश कासलीवाल,महावीर झंडा, महावीर अजमेरा,पंडित संतोष बजाज,हरकचंद जैन पीपलू ,सत्येंद्र कुमार झंडा , महावीर लदाना,पारस नला,सुरेश डेठानी, शिखर मोदी, धर्म चंद पीपलू,सुरेंद्र चौधरी, ललित मांदी, सुनिल मोदी,सुशील कलवाड़ा, कमलेश झंडा,अनिल कठमाना, पारस मोदी, त्रिलोक जैन ,पीपलू , विमल कलवाड़ा,सुविधि कड़ीला,तथा कमलेश चौधरी सहित सभी श्रावक श्राविकाएं मौजूद थे।

मैं कुछ हूं का भाव त्याग करो, तभी मृदुता आ सकती है : आर्यिका वर्धस्व नंदनी

तिजारा, अलवर. शाबाश इंडिया

चंद्र प्रभु दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र देहरा तिजारा में वषायोग रत आचार्य श्री वसुनंदी महाराज की शिष्या आर्यिका वर्धस्व नंदिनी माताजी के सानिध्य में प्रबन्ध समिति द्वारा दस लक्षण महापर्व के अंतर्गत दस दिवसीय वृहद समवशरण महार्चना का आयोजन किया जा रहा है ।जिसके अंतर्गत द्वितीय दिवस उत्तम मार्दव धर्म पर आर्यिका माताजी ने कहा कि उत्तम मार्दव यानी कोमलता, नम्रता एवं सौम्यता जब व्यक्ति के जीवन से क्रोध,क्रूरता,वैर विरोधी जैसी दुर्भावनाएं निकल जाती हैं। तब चित्त में इस धर्म का उदय होता है। आर्यिका श्री ने समझाते हुए कहा कि मार्दव का विपरीत भाव है अहंकार, जब तक अहंकार अर्थात ''मैं'' का भाव रहता है ।कि ?मैं कुछ हूं? तब तक मार्दवता पूरी तरह आ नहीं पाती इसलिए देने के लिए दान, लेने के लिए सम्मान और त्यागने के लिए अभिमान सर्वश्रेष्ठ है जिस व्यक्ति के अंदर मैं का स्वर होता है उसके अंदर प्रेम पवित्रता मृदुता का स्वर नहीं होता।किंतु जहां मैं नहीं हम का स्वर होता है ।वहां विनयादि समस्त गुण शोभा को प्राप्त होते हैं। आप वाणी में सुई भले ही रखो पर उसमें धागा डालकर रखो। ताकि सुई केवल छेद ही ना करें आपस में माला की तरह जोड़कर भी रखें। क्योंकि अभिमान की ताकत फरिश्तों को भी शैतान बना देती है और नम्रता साधारण व्यक्ति को भी फरिश्ता बना देती है। इसलिए सम्भलिये अहंकार के अंधकार में नम्रता, मृदुता, मधुरता का प्रकाश कीजिए जिससे आपकी आत्मा इन शाश्वत धर्म से सरोबार हो जाए। प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष मुकेश जैन के अनुसार आर्यिका संघ के सानिध्य में क्षेत्र पर धर्म की गंगा प्रवाहित हो रही है। धर्म जागृति संस्थान के राष्ट्रीय प्रचार मंत्री संजय जैन बड़जात्या व प्रांतीय अध्यक्ष पदम जैन बिलाला के अनुसार धर्म जागृति संस्थान राजस्थान प्रान्त द्वारा आयोजित अहिंसक आहार पोस्टर प्रतियोगिता की प्रदर्शनी फिरोजाबाद में भी प्रदर्शित की जाएगी।

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन का द्वितीय विशाल अंतरराष्ट्रीय जैन युवक-युवती परिचय सम्मेलन

इंदौर. शाबाश इंडिया

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के तत्वावधान में प्रथम परिचय सम्मेलन की अपार सफलता के पश्चात इस वर्ष दिव्यती परिचय सम्मेलन इंदौर में समाज की बेटी समाज में की उदंत भावना के साथ दिसंबर 2024 तारीख फेडरेशन के राष्ट्रीय मिडिया प्रभारी राजेश जैन दद्दू ने बताया कि 15/12/24 को इंदौर में परिचय सम्मेलन सम्पन्न होगा । फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश विनायका ने कहा कि आज के समय में समाज के सभी वर्ग के परिवार के सामने सबसे महत्वपूर्ण चुनौती अपने बेटे / बिटिया हेतु जैन समाज में से योग्य वर वधू का चयन करना है। दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन ने इस दिशा में आगे बढ़ते हुए गत वर्ष प्रथम विवाह योग्य युवक युवती हेतु एक परिचय सम्मेलन का आयोजन किया था और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 3500 से अधिक ग्रुप परिवार के एव उनके संपर्क से विश्वसनीय‚ड्डिं प्राप्त होने से परिचय सम्मेलन को अपार सफलता प्राप्त हुई

थी, अपने सामाजिक दायित्वो के तहत इस वर्ष पुनः अन्तर्राष्ट्रीय युवक- युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन 'इंदौर' में आयोजित होगा।

विश्व हिंदू परिषद के स्थापना दिवस पर स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

रमेश भार्गव. शाबाश इंडिया

ऐलनाबाद । विश्व हिंदू - परिषद के 60वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आज स्थानीय डीएवी स्कूल में निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस जांच शिविर में सैकड़ों लोगों के स्वास्थ्य की जांच की गई व निःशुल्क दवाइयां वितरित की गई। परिषद के मीडिया प्रभारी देवेंद्र गोयल ने बताया कि कार्यक्र म में विश्व हिंदू परिषद हरियाणा के प्रांत सह सेवा प्रमुख अजीत सिंह विशेष रूप में हाजिर हुए। इस अवसर पर सुरेश तलवाडिया, राधेश्याम छपोला, प्रखंड अध्यक्ष रविंद्र मित्तल, प्रखंड मंत्री प्रेम बिंदाल, जिला संपर्क प्रमुख वेद मित्र गुप्ता, जिला कोषाध्यक्ष विकास गोयल, बजरंग दल संयोजक शुभम सैनी, सहसंयोजक जयवर्धन राठौड़, मिलन प्रमुख मंगत राम, संपर्क प्रमुख हरीश पारीक, महेश कुमार, हीरालाल, गोविंद, सतीश कुमार, अनुपम कुमार, सीताराम भार्गव सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में डाक्टरों की टीम व आए हुए अतिथियों को परिषद पदाधिकारीयों द्वारा मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया।

आचार्य 108 श्री इन्द्रनंदी जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में दश लक्षण महापर्व महोत्सव में उत्तम मार्दव धर्म की हुई

डिग्गी. शाबाश इंडिया

धर्मपरायण नगरी डिग्गी में आचार्य श्री इन्द्र नंदी जी महाराज, मुनि श्री उत्कृष्ट सागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में अग्रवाल समाज 84 के तत्वाधान में अग्रवाल सेवा सदन शांति नाथ जिनालय डिग्गी में चल रहे दशलक्षण महापर्व के दूसरे रोज उत्तम मार्दव धर्म की पूजा हुई ,कार्यक्रम में जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने शिरकत करते हुए बताया की शांति नाथ जिनालय में प्रातः अभिषेक, शांतिधारा के बाद अनेक धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किये गये कार्यक्रम में पदमचंद,राहुल कुमार, सुरेश चंद जैन पंवालिया वाले सांगानेर निवासी ने श्री जी की महाशांति धारा करने का सोभाग्य प्राप्त किया। इसी कड़ी में मिलाप चंद -ललिता देवी, शांतिलाल, भागचंद, प्रमोद कुमार जैन पचेवर वाले मदनगंज किशनगढ़ निवासी ने आचार्य इन्द्रनंदी जी महाराज,मुनि उत्कृष्ट नंदी जी महाराज स संघ का पाद प्रक्षालन कर जिनवाणी भेंट करने का सोभाग्य प्राप्त किया। कार्यक्रम में मुनि सेवा समिति के मंत्री विमल कुमार जैन एवं फागी पंचायत के पूर्व प्रधान सुकुमार झंडा ने बताया कि सौधर्म इंद्र गोविंद जैन -श्रीमती राज जैन जर्मन वालों ने सभी इन्द्रों के साथ विधान पर 11अर्घ्यअर्पित कर सुख समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की ओर बताया कि उक्त कार्यक्रम आचार्य इन्द्र नंदी जी महाराज स संघ के पावन सानिध्य में, मुनि सेवा समिति अग्रवाल समाज 84 के तत्वाधान में, सकल दिगम्बर जैन समाज डिग्गी के सहयोग से पंडित बृजेश कुमार शास्त्री महुआ के दिशा-निर्देश में साज बाज के साथ विभिन्न मंत्रोच्चारणों के द्वारा हर्षोल्लास पूर्वक चल रहा है।इस कार्यक्रम में 51 इंद्र इंद्राणियों ने पूजा अर्चना कर पुण्य लाभ प्राप्त किया, गोधा ने अवगत कराया कि दशलक्षण महापर्व के दूसरे दिन आज उतम मार्दव धर्म पर आचार्य इन्द्र नंदी जी महाराज ने श्रावकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि उत्तम मार्दव धर्म का अर्थ है अभिमान पर विजय प्राप्त करना, अर्थात अंहकार की भावना,वंश,कुल धन दौलत, शान, शौकत, या किसी चीज में श्रेष्ठ होना हमें अहंकारी और अभिमानी बना देता है, उन्होंने कहा कि जब चक्रवर्तियों का वैभव ही नहीं रहा तो हम अभियान किस बात का करें, अतः अहंकार छोड़कर विनम्रता से जीवन जीना चाहिए, जिसमें विनम्रता है वह मोक्ष महल का गामी है। उत्तम मार्दव धर्म जीवन को सुगन्धित करने की सीख देता है।उक्त कार्यक्रम में अग्रवाल समाज 84 के अध्यक्ष अनिल सूराशाही,कोषाध्यक्ष महेंद्र कुमार जैन पराना , फागी पंचायत समिति के पूर्व प्रधान सुकुमार झंडा, सत्यप्रकाश जैन सांगानेर,अग्रवाल सेवा सदन डिग्गी के संचालक गोविंद जैन एवं प्रकाश जैन डिग्गी, महावीर प्रसाद जैन,पदम चंद जैन पचेवर, विमल कुमार जैन पचेवर, सीताराम जैन, हरिशंकर गर्ग, बिरधी चंद जैन मालपुरा, भागचंद जैन परवण ,पदम जैन पीपलू वाले निवाई, तथा राजाबाबू गोधा फागी सहित सभी पदाधिकारी गण श्रावक श्राविकाएं मोजूद थे।

क्रोध का अभाव करने पर ही क्षमावान बन सकते हैं: आचार्य श्री आर्जवसागर जी

सौरभ जैन. शाबाश इंडिया

पिड़ावा। आचार्य श्री नें मंगल प्रवचन के दौरान कहा कि सोलहकारण महापर्व अनुष्ठान में दसलक्षण महापर्व का आयोजन भी बड़ी ही लगन के साथ, बड़ी ही भावना के साथ, आप लोग सभी भक्ति स्तुति वंदना कर रहे हैं। भगवान की भक्ति के साथ इन भव्यों के दिल में गुरु की भक्ति, साधु की भक्ति में भी कूट-कूट कर दिख रही है। यह भक्ति ही हमें मोक्ष रूपी द्वार को खोलने में कारण बनाती है। इस भक्ति से हमारा आंतरिक हृदय पहचान में आता है और मन भी प्रफुल्लित होता है। यह भक्ति तीर्थंकर प्रकृति के बंध में कारण बनती हैं। उत्तम क्षमा धर्म के पावन अवसर पर आचार्य श्री ने अपने मंगल प्रवचन के दौरान कहा कि क्रोध का अभाव होना ही क्षमा है। हमें यह जानना है कि क्षमा का अर्थ क्या है? क्षमा क्यों मांगी जाती है, क्षमा किससे मांगी जाती है, क्षमा करने से क्या फल होता है, सभी धर्मों में एक उत्तम शब्द भी लगाया जाता है। उत्तम क्षमा आदि जो 10 धर्म होते हैं, उनमें उत्तम गति प्राप्ति के कारण यह उपयोग करते हैं। धर्म रूपी रथ संसार से पार लगाएं और कोई किसी प्रकार की आकांक्षा हम नहीं रखते। धर्म करने से नियम से पुण्य का आश्रम होता है जो धर्म की रक्षा करता है। धर्म उसकी रक्षा करता है। धर्म से जो पुण्य आता है उससे धन,व्यवहार भी प्राप्त होते हैं और कर्मों का क्षय करके उससे निर्वाण की भी प्राप्ति होती हैं। ऐसी उत्तम गति प्राप्त करने हेतु ,मोक्ष की प्राप्ति हेतु यह उत्तम शब्द लगाया जाता है। कर्मों से मुक्ति होने के बाद जीव अपनी स्वभाव अवस्था में पहुंच जाता है। हम भी यह विचार करें कि ऐसा महान अवसर कब आएगा जब हम भी संपूर्ण कर्मों का अभाव करके अपने स्वभाव की प्राप्ति कर लेंगे।

क्षमा मांगने से बढ़कर क्षमा करना होता है

जिसकी आत्मा किंचित भी क्लेश भाव नहीं लाती, ऐसे योगी, ऐसी आत्मा ; उत्तम क्षमा की धारी होती है। पूर्व संस्कार बश क्रोध आता है परंतु हम पुरुषार्थ वश इसे जीत सकते हैं। कषाय आत्मा का विगाड़ करती है। ऐसा सोचने पर क्रोध को वश में कर सकते हैं।

क्रोध क्यों आता है?

तामसिक भोजन से मन बहल होता हैं और उत्तेजना लाने वाले गरिष्ठ आहार से भी क्रोध आता है अतः हमें ऐसे भोजन का भी त्याग करना चाहिए। क्रोध ना करते हुए समाधान चित्त रहना ही एक एक क्षमा धारी व्यक्ति की पहचान होती हैं ।

क्रोध करने से क्या होता है?

क्रोध के कारण बड़े-बड़े युद्ध भी हो जाते हैं। आपस का प्रेम भी नष्ट हो जाता है और स्मरण शक्ति भी कमजोर होने लग जाती है।

क्रोध को किस प्रकार छोड़ना है?

इससे बचने का उपाय क्या है? आचार्य श्री ने बताया कि क्रोध जीतने के लिए हमें जिस से डर लगता है उसके लिए हम याद करें अथवा मौन ले लें। मौन धारण करने से अच्छे से अच्छे शत्रु भी जीते जा सकते हैं। पूज्य पुरुषों को याद करने से भगवान को याद करने से, हम सामने वाले पर माध्यस्त भाव रखने से भी क्रोध शांत कर सकते हैं। और मौन से बड़ी कोई शक्ति नहीं है। मौन से ही क्रोध को जीता जा सकता है।

क्रोध कब आता है?

आचार्य श्री जी ने बताया कि जब तक हम जवाब देते चले जाते हैं तब तक क्रोध आता रहता है और लड़ाई झगड़े होते रहते हैं।और जब हम शुद्ध भाव रखेंगे, क्रोध का शमन करेंगे तो अपने आप ही सरल सहज बन जाएंगे। इस प्रकार आचार्य श्री ने क्रोध रूपी शत्रु का नाश करके क्षमा रुपी मित्र को अपनाने का मार्ग बताया।

कोटा डिस्ट्रिक्ट ताइक्वांडो अकेडमी के 12 खिलाड़ियों ने जीते स्वर्ण पदक

कोटा. शाबाश इंडिया

68 वी जिला स्तरीय ताइक्वांडो प्रतियोगिता का आयोजन 8 से 12 सितंबर को एस आर पब्लिक स्कूल कोटा में किया गया जिसमें कोटा के कई स्कूल और अकेडमी के बच्चों ने भाग लिया। कोटा डिस्ट्रिक्ट ताइक्वांडो एसोसिएशन के अध्यक्ष अनिल कुमार ने बताया कि इस प्रतियोगिता में अंडर 17 व अंडर 19 वर्ग के खिलाड़ियों ने भाग लिया जिसमें कोटा डिस्ट्रिक्ट ताइक्वांडो अकेडमी ने 12 गोल्ड मेडल 2 सिल्वर,5 ब्रोंज मेडल जीतकर चैम्पीयन्शिप अपने नाम की। अंडर 17 में रिदम शर्मा, मनमित सिंह, दिव्यांश बैनीवाल, राजकुमार राठौर,दैविक सिंगल, अर्पित सिंह, हर्षिता राठौर, राधिका प्रजापति,

आरुषि व अंडर 19 में गरिमा शर्मा, देवराज बंसल, अविनाश मीणा ने गोल्ड मेडल जीते व सिल्वर मेडल विजेता भूमिका चितौड़ा,हर्षित मेरोठा,व ब्रांज मेडल अनुराज जांगिड़, दिव्यांशी मीणा, रीना मीना, डी कृष्णा, जय मालपनी ने ब्रांज मेडल हासिल किया। शिवज्योति, माँ भारती, डीपीएस , डीडीपीएस व राजकीय गॉरमेंट स्कूल आदि कई स्कूलों ने भाग लिया। कोटा डिस्ट्रिक्ट ताइक्वांडो एसोसिएशन के अध्यक्ष अनिल कुमार ने बताया कि मेडल ना सिर्फ.जीत का प्रतीक है बल्कि कड़ी मेहनत का प्रतिफल है। विजेता खिलाड़ी 17से 24 सितंबर को राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए झुनझुनू जाएंगे।इस अवसर पर गॉरमेंट कोच ललित भट्ट व पूजा सुमन, अभिषेक कुमार विपिन भाटी, डीके शर्मा, नेशनल रेफ्री आइशानी सक्सेना, हर्षित शर्मा, इंद्रजीत सिंह,बनवारी मीना,ने सभी खिलाड़ियों को बधाई दी।

ज्ञानतीर्थ टोडरमल स्मारक भवन में दशलक्षण महापर्व का दूसरा दिन

दीनता और प्रभुता दोनों ही है मानः सुमतप्रकाश जैन

जयपुर. शाबाश इंडिया

पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के बैनर तले बापू नगर स्थित ज्ञानतीर्थ पंडित टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे दशलक्षण महापर्व के दूसरे दिन सोमवार को उत्तम मार्दव धर्म की आराधना की गई। इस मौके पर हुए दशलक्षण विधान के दौरान आसपास का क्षेत्र भक्ति और आस्था के रंग में डूब गया। 17 सितम्बर तक मनाए जाने वाले इस महापर्व में दशलक्षण विधान,विद्वानों के प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रम सहित अनेक आयोजन होंगे। महामंत्री परमात्म प्रकाश भारिल्ल ने बताया कि आज सुबह श्रीजी के अभिषेक के बाद पर साजों के बीच दशलक्षण विधान हुआ। इस दौरान आया मंगल दिन मंगल अवसर...वीर भजले ...जैसे भजनों की स्वर लहरियों के बीच वातावरण भक्तिमय हो गया। इस अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए विश्व सविख्यात बाल ब्रह्मचारी सुमतप्रकाश जैन, खनियाधाना ने उत्तम मार्दव के बारे में समझाते हुए कहा कि अहंकार का विसर्जन करके सभी प्राणियों के प्रति कोमल बन जाना,मृदु बन जाना। उपलब्धियों का उत्सव मनाओं लेकिन उनका अहंकार मत करां आदमी के पास जब पद, पैसा, प्रतिष्ठा आ जाती है तो वह अकड़ कर चलने लगता है। उसमें अकड़ पैदा हो जाती है जबकि अकड़ तो मुर्दापन की पहचान हैं। अतः विनम्र बनों, हाथ जोड़कर चलो, तो दिल अपने आप जुड़ते चले जाएंगे।क्यों कि हाथ जोड़ते है तो दो दिल भी जुड़ जाते है। आगे कहा कि हाथ बाधकर चलोगों तो मित्र भी दुश्मन बन जाऐगे अतः अहम का त्याग कर मार्दव भाव अपनी आत्मा में लाये तभी आपका कल्याण होगा। ज्ञान और मान जन्मजात शत्रु हैं। दीनता और प्रभुता दोनों मान ही हैं। उन्होनें आगे कहा कि जिसप्रकार पैसे आदि घटने बढ़ने से किसी का पति घटता बढ़ता नहीं है सो ही पर्याय घटने बढ़ने पर जीव घटता बढ़ता नहीं है। सम्यक्त्व की भावना आत्मा की भावना है और उसकी इच्छा विकल्प है, आर्तध्यान है। विकल्प होने पर चिंता होती है, परन्तु निज सत्ता का श्रद्धान होने पर सम्यकदर्शन होता है, निर्विकल्प पना होता है। इसीदिन साम को डॉ. शांतिकुमार पाटील के प्रवचन हुए और इसके बाद रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। महामंत्री परमात्म प्रकाश भारिल्ल ने बताया कि 13 सितम्बर को सुगंध दशमी के अवसर पर भव्य झांकी सजाई जाएगी व 18 सितम्बर को क्षमावाणी कार्यक्रम व त्यागी व्रतियों का सम्मान किया जाएगा।

मृदुता का भाव मार्दव है, सरलता, विनय के गुण हमारे भीतर आ जाते हैं तो नम्रता, समर्पण अंतरंग में प्रकट हो जाता है : मुनिश्री 108 पावनसागर जी महाराज

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्रप्रभ जी दुगार्पुरा में परम पूज्य मुनि श्री 108 पावनसागर जी महाराज ने सोमवार दिनांक 09 सितम्बर को दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन करते हुए बताया कि, मृदुता का भाव मार्दव है, सरलता, विनय के गुण हमारे भीतर आ जाते हैं तो नम्रता, समर्पण अंतरंग में प्रकट हो जाता है। अहंकार आत्मा का सबसे बड़ा शत्रु है, उसके अंदर दूसरे के प्रति सहानुभूति नहीं होती है मानवता उससे कोसों दूर भागती है। मनुष्य-जीवन विनम्रता से ही सफल होता है। विनम्रता ही उत्तम मार्दव धर्म है। पानी की बूंद का मिटना बुरा नहीं है, क्योंकि वह सागर बन जाती है। मिट्टी का पिटना बुरा नहीं है, क्योंकि वह गागर बन जाती है। नदी के बहने का लक्ष्य सागर में मिलना है, वह अहंकार छोड़कर बहती रहती है। मुनिश्री ने जीभ और बत्तीसी का उदाहरण देते हुए बताया जीभ में मृदुता है, कोमल है और बत्तीसी कठोर है। दोनों के बीच दोस्ती हो जाती है तो झगड़ा नहीं होता। भरत और बाहुबली में दृष्टि, जल और मल्ल युद्ध हुए। भरत के दिल में पीड़ा हुई कि भाई को मल्ल युद्ध में नीचे क्यों पटकू, वैराग्य का बीज आ गया। चक्रवर्ती भरत ने बाहुबली से कहा भाई आज तक धरती का कोई पति नहीं बन सका, मै कैसे धरती का पति हो सकता हूँ, बाहुबली के मन की शल्य दूर हो गई और अन्त में वैराग्य हो गया। विनम्रता जीवन को ऊपर उठा देती है अज्ञानी पौदगलिक पदार्थों पर अभिमान करता है। जो झुक जाता है वह सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश चन्द चांदवाड़ एवं मंत्री राजेन्द्र काला ने बताया कि दशलक्षण महापर्व में आज प्रातः 6.15 बजे प्रथम अभिषेक शांतिधारा जी.सी. जैन संजय बड़जात्या ने की। दशलक्षण मंडल विधान की पूजन मण्डल पर प्रकाश चन्द मनोरमा चांदवाड़ ने श्रद्धालुओं के साथ बड़े भक्ति भाव से की। सायंकाल 6.30 बजे आरती गुरु भक्ति, संत सुधासागर आवासीय महाविद्यालय की विदूषी बहनें मानसी जैन व तनीषा जैन की तत्व चर्चा हुई है सांस्कृतिक कार्यक्रम में रात्रि 8:00 बजे श्री दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभु महिला मण्डल दुगार्पुरा द्वारा धार्मिक हाऊजी हुई।

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता आयोजित

भव्य जैन प्रथम और काशवी जैन द्वितीय स्थान पर रही

जयपुर । दसलक्षण पर्व के अवसर पर महिला जागृति संघ द्वारा बड़े दीवान जी का मंदिर मणिहारो का रास्ता में आज फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता आयोजित की गई। संयोजक शारदा सोनी अनीला पापड़ीवाला और दीपिका गोधा ने बताया कि फैंसी ड्रेस की इस प्रतियोगिता में 15 बच्चों में भाग लिया । संस्था सचिव शशि जैन ने बताया कि फैंसीड्रेस की प्रतियोगिता में भव्य जैन प्रथम स्थान पर और द्वितीय स्थान पर काशवी जैन रही । प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतियोगी बच्चों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया । महिला जागृति संघ द्वारा दस लक्षण पर्व पर मंदिर प्रांगण में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किया जा रहे हैं ।

झुमरीतिलैया श्री दिगंबर जैन मंदिर में दशलक्षण महापर्व पर उत्तम मार्दव धर्म की पूजा हुई

झुमरीतिलैया. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन मंदिर में दशलक्षण महापर्व के दिनांक 09/09/2024 द्वितीय उत्तम मार्दव धर्म के रूप में मनाया गया जिसमें कुंडलपुर से आई पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज की परम शिस्या गुणमाला दीदी ओर चंदा दीदी के सान्निध्य एवम नेतृत्व में भव्यातिभव्य श्री जी की आराधना के साथ आज प्रातः नया मंदिर जी मे प्रथम अभिषेक एवम शांतिधारा बिमल-विकाश सेठी एवम बड़ा मंदिर जी के मूल वेदी में प्रथम अभिषेक ओर शांतिधारा राकेश-आदित्य जैन छाबडा ओर 1008 चन्द्रप्रभु भगवान का श्री विहार ओर पाण्डुकशिला पर प्रथम अभिषेक ओर शांतिधारा अनिल-सिद्धार्थ जैन ठोल्या ओर दूसरी वेदी पर 1008 आदिनाथ भगवान की वेदी में प्रथम अभिषेक ओर शांतिधारा सुरेन्द-सौरभ जैन काला के परिवार को सौभाग्य मिला इसी के साथ पुण्यार्जक परिवारों ललित-नीलम जैन सेठी की ओर से विभिन्न धार्मिक क्रियाओं को संपादित करते हुए अभूतपूर्व उत्साह के साथ विधान की पूजन करते हुवे श्री जी के चरणों मे अर्घ समर्पित किया,इसके बाद दीदी ने आज मार्दव धर्म पर प्रकाश डालते हुवे बताया कि जिस प्रकार बंजर भूमि या कंक्रीट भूमि में बीज बोने से फसल नही होता उसी प्रकार अगर मन मे अहंकार है तो उनका जीवन बेकार है । इसके बाद समाज के सभी पदाधिकारी के साथ समाज के सेकड़ो लोग कार्यक्रम में शामिल हुवे ।संध्या में भव्य आरती के साथ णमोकार चालीसा का पाठ ,दीदी द्वारा दस धर्मो का विवेचन हो रहा है इसके पश्चात सांस्कतिक कार्यक्रम में प्रथम दिन धार्मिक तम्बोला का कार्यक्रम हुवा। उक्त जानकारी नविन जैन,राज कुमार जैन अजमेरा ने दी।

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, निर्माण नगर मे दसलक्षण पर "आगम का सार" नाटक का मंचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, निर्माण नगर मे दसलक्षण के पर्व पर ''आगम का सार'' विषय पर नाटक का मंचन किया गया। जिसमे समाज की निर्मला ठोलिया, निशा ठोलिया, श्वेता जैन, रचना जैन, कविता जैन आदि महिलाओं ने भाग लिया। नाटक मे आगम सूत्र के महत्त्व को दर्शाया गया।

'उत्तम मार्दव विनय प्रकाशे, नाना भेद ज्ञान सब भासै' नेमीसागर कॉलोनी में आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

नेमीसागर कालोनी स्थित जैन मंदिर में दसलक्षण महापर्व के दूसरे दिन उत्तम मार्दव धर्म की पूजन की गई। इस अवसर पर विधानाचार्य पंडित सतीश जैन ने मार्दव धर्म पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उत्तम मार्दव अपनाने से मान व अहंकार का मर्दन हो जाता है और सच्ची विनयशीलता प्राप्त होती हैं। अध्यक्ष जे के जैन कालाडेरा ने बताया कि सांयकाल मे श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान के तहत संचालित संत सुधासागर कन्या आवासीय विद्यालय की बालिकाओं द्वारा नाटक स्लो पॉयजन का मंचन किया गया, जिसके पुण्यार्जक डी सी जैन एवं परिवार थे। बालिकाओं ने नाटक स्लो पॉयजन के माध्यम से मोबाइल के समाज पर पड़ रहे दुष्प्रभावों को बहुत ही प्रभावी ढंग से प्रदर्शित किया। इस अवसर पर बालिका विद्यालय की अधिष्ठात्री शीला ड्योडा एवं प्राचार्य सतीश जैन भी उपास्थित रहे। पूजन स्थापना, सांयकालीन आरती एवम दीप प्रज्वलन डी सी जैन एवं परिवार द्वारा किया गया।

विवेक विहार जैन मंदिर में दसलक्षण पर्व के अवसर पर हुए अनेक आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। विवेक विहार जैन मंदिर में दस दिवस दसलक्षण पर्व के अवसर पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे है। विवेक विहार दिगंबर जैन समाज प्रवक्ता नरेश जैन मेड़ता ने बताया कि प्रातः काल समाज के सदस्यों ने उमंग और उल्लास के साथ भगवान के अभिषेक किए गए एवं उत्तम क्षमा धर्म एवं उत्तम मादर्व धर्म मनाया गया । दसलक्षण पर्व संयोजक सुनील सरावगी ने बताया कि ब्रह्मचारिणी रुबी दीदी टीकमगढ़ के सानिध्य में भगवान के अभिषेक के बाद झंडा रोहण एवं मंगल कलश की स्थापना की गई इसके पश्चात सुप्रसिद्ध संगीतकार संजय पाटनी लाडनूँ एवं उनकी टीम के द्वारा संगीतमय सामूहिक पूजा अर्चना कराई गई जिसमें समाज के पुरुष व महिला ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। रात्रि में भगवान की आरती के पश्चात ब्रह्मचारिणी रुबी दीदी ने उत्तम क्षमा धर्म पर प्रवचन दिया एवं भक्तामर स्तोत्र पाठ का आयोजन किया गया। भक्तामर पाठ के दौरान संगीतकार संजय जैन लाडनूं ने भक्तिमय माहौल बनाकर सभी श्रावक श्रावीकाओं को भक्ति के रंग में डुबो दिया। इस अवसर पर समाज के पदाधिकारी,समाज सदस्यगण उपस्थित थे।

उत्तम मार्दव गुनमन माना, मानकरन कौ कौन ठिकाना...

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिगम्बर जैन धर्मावलंबियों के चल रहे दशलक्षण महापर्व में दूसरे दिन वीतराग धर्म का दूसरा लक्षण उत्तम मार्दव भक्ति भाव से मनाया गया। इस मौके पर शहर के दिगम्बर जैन मंदिर परिसर जयकारों से गुंजायमान हो उठे। राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि दिगम्बर जैन मंदिरों में प्रातः श्री जी के अभिषेक, शांतिधारा के बाद दशलक्षण धर्म की विधान मंडल पर अष्ट द्रव्य से पूजा अर्चना की गई। चातुर्मास स्थलों पर संतो एवं विद्वानों ने उत्तम मार्दव पर प्रवचन दिया। जिसमें बताया गया कि 'मानमहा विषरुप, करहि नीच गति जगत में । कोमल सुधा अनूप, सुख पावे प्रानी सदा।। उत्तम मार्दव गुनमन माना, मानकरन कौ कौन ठिकाना।बस्यो निगोद माहि तै आया, दमरी रुंकन भाग बिकाया।।' ' अर्थात मान एवं घमण्ड बहुत ही तेज विष है, जो मनुष्य को नीच गति में ले जाता है। अतःमनुष्य को अपने जीवन में कभी भी मान व घमण्ड नही करना चाहिए।

जैन मंदिर कीर्तिनगर में दशलक्षण महापर्व का दूसरा दिन

सभी को पसंद आया नृत्य नाटिका वज्र बाहु का वैराग्य मंचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। टोंक रोड,कीर्ति नगर के जैन मंदिर में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर सोमवार को महिला मंडल के तत्वावधान में सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत नृत्य नाटिका ''वज्र बाहु का वैराग्य'' का मंचन किया गया,जिसे सभी ने पसंद किया। मंदिर अध्यक्ष अरुण काला व प्रचार संयोजक आशीष बैद ने बताया कि इस मौके पर मुख्य अतिथि जयपुर ग्रेटर महापौर सौम्या गुर्जर व क्षेत्रीय पार्षद रमेश सैनी रहे जबकि दीप प्रज्वलन समाजश्रेष्ठी प्रेम चंद, आशीष गंगवाल परिवार रहे। नृत्य नाटिका कार्यक्रम की संयोजिका डॉ शिप्रा बैद , रीना कासलीवाल, सोनल पाटनी ने बताया कि इस नटिका में वजबाहु के बचपन से वैराग्य की कहानी का बहुत ही मोहक ढंग से प्रस्तुत किया,जिसे सभी ने पसंद

किया। महामंत्री जगदीश जैन ने बताया कि सुबह मुनिश्री समत्व सागर जी महाराज और शील सागर जी के साथ शिविर में साधको ने हिस्सा लिया। इसके बाद साजों के बीच पूजा हुई। इसके बाद हुई धर्मसभा में मुनि श्री समत्व सागर जी महाराज ने उत्तम मार्दव धर्म को समझाते हुए कहा कि मार्दव धर्म का मतलब है, मृदुता का भाव या नम्रता। जब हमारे परिणाम विनम्र और निर्मल होंगे तभी जीवन शांति आएगी । उत्तम मार्दव की पालन से कर्मों का नाश होता है और हमारे कदम मोक्ष मार्ग की ओर स्वयंमेव ही बढ़ जाते है। जीवन में सफलता पाने के लिए मन में कटुता का भाव नहीं रखना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि अहंकार एक ऐसा गुण है जो आत्मा के मूल स्वभाव व गुणों को कभी भी अगीकार नहीं करने देता। अहंकार आधुनिक संसार में भी पतन का कारण बनता है। अहंकारी व्यक्ति समाज एवं परिवार सभी जगह उपेक्षित होता है। उत्तम मार्दव धर्म, आत्मा यानी निजात्मा के स्व-स्वरूप का धर्म है। इसलिए जीवन को सार्थक बनाने के लिए अहंकार का त्याग जरूरी है। इसलिए हम सरल बने,विनम्र बने जिससे हमारा जीवन और उन्नत बन सके। उन्होंने आगे कहा कि मार्दव का मतलब होता है, अपने अंदर के मान को समाप्त करना। इंसान जिस मान अभिमान में अपने आप को सर्वोपरि समझता है। उस मान गुमान को समाप्त करके उस पर विजय प्राप्त करना ही मार्दव धर्म है। जब तक व्यक्ति के जीवन में अहंकार रहेगा तब तक मार्दव धर्म प्रकट नहीं हो सकता। मार्दव धर्म आत्मा अर्थात निजात्मा स्व-स्वरूप का धर्म है। जहाँ मृदु भाव या नम्रता नहीं है वहाँ धर्म भी नहीं है। और वहाँ नियम, व्रत, तप, दान, पूजा इत्यादि जो मानव करता है विनय भाव के बिना सभी व्यर्थ गिनाया जाता है। और कहता है कि मैंने ऐसा किया जो भी किया मैंने किया अन्य कोई भी मेरे समान किया नहीं इस तरह कह कर जो मान कषाय करता है वह अपनी आत्मा को ठगता है और दुनियाँ को भी ठगाया समझना चाहिए।

मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में आयोजित स्व धर्म साधना शिविर में उमड़े श्रद्धालु

फोटो: साकेत, कुमकुम फोटो
मोबाइल 9829054966

जयपुर. शाबाश इंडिया

मीरामार्ग के सैक्टर 9 स्थित सामुदायिक केन्द्र पर मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में दशलक्षण महापर्व मनाया गया। इस मौके पर दस दिवसीय स्व धर्म शिविर में प्रातः उत्तम मार्दव धर्म पर ध्यान करवाया गया। अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं मंत्री राजेन्द्र सेठी ने बताया कि शिविर में प्रातः 5.00 बजे से रात्रि 8.30 बजे तक आत्म साधना के साथ पूजा भक्ति के विशेष आयोजन किये गये। वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील बैनाडा के अनुसार इस मौके पर उत्तम मार्दव पर अपने प्रवचन में आचार्य श्री ने कहा कि जहां श्रेष्ठ मृदुता है, वहीं मार्दव धर्म है। अहंकार जीवन को कमजोर बनाता है, अतः इसका त्याग करना चाहिए। शिविर में तत्वार्थ सूत्र का विधान प्रारंभ हुआ जिसमें सौधर्म इन्द्र इन्दर, महेश, अशोक, राजेन्द्र , अंकुर, अरिहंत, नमन, संभव, कविश, अधिराज, क्रियांश, आगत एवं समस्त बाकलीवाल परिवार अशोका इलेक्ट्रिकल्स वालो को मिला। कुबेर इन्द्र प्रेम देवी, पारस, राजीव, संजय कासलीवाल कुम्हेर वाले, चक्रवर्ती छुट्टन देवी सुशील पहाड़िया ने सौभाग्य प्राप्त किया। मुनि श्री ने अपने प्रवचन में तत्वार्थ सूत्र के दूसरे अध्याय - जीव के असाधारण भावों को बताते हुए कहा कि जीव का लक्षण उपयोग है। जीवों के प्रकार, उनका जन्म, मन सहित, मन रहित, विग्रह गति के प्रकार, योनियों के भेद और उत्पत्ति एवं शरीर के प्रकार इत्यादि पर 53 सूत्रों का वाचन कर उस पर अर्घ्य समर्पित किये। इन 53 सूत्रों को संक्षिप्त में समझाया। इससे पूर्व धर्म सभा का दीप प्रज्जवलन व मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज के पाद पक्षालन किया। प्रतिक्रमण पाठ सहित रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये। अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं मंत्री राजेन्द्र सेठी ने बताया कि मुनि प्रणम्य सागर महाराज का 49 वां अवतरण दिवस बुधवार 11 सितम्बर को दोपहर 2 बजे से हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। इस मौके पर 49 श्रावक श्रेष्ठी मुनि श्री के पाद पक्षालन व शास्त्र भेट करने का पुण्यार्जन करेगें। सायंकाल महाआरती होगी जिसमें सभी श्रद्धालु अपने अपने घरों से दीपक लाएंगे।

अहम के विसर्जन से ही मार्दव की शुरूआत होती है, जीवन में विनम्रता का होना बहुत ही आवश्यक है : प्रज्ञा सागर महाराज

झालरापाटन. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन समाज के 10 लक्षण पर्व के दूसरे दिन सोमवार को श्रावकों ने उत्तम मार्दव धर्म को अंगीकार कर विशेष पूजा अर्चना की। शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, चंद्रप्रभ मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर, सांवला जी मंदिर, आदिनाथ मंदिर, नेमी नगर लालबाग स्थित सीमंधर जिनालय, कल्पतरु पार्श्वनाथ नसिया, अतिशय क्षेत्र जूनी नसिया मे सुबह से ही शांति धारा और अभिषेक के साथ नित्य नियम पूजा, 10 लक्षण धर्म पूजा की गई। शांतिनाथ बाड़ा मे तपोभूमि प्रणेता एवं पर्यावरण संरक्षक आचार्य प्रज्ञा सागर महाराज के सानिध्य में विधानाचार्य राजकुमार जैन बैंक वाला ने संगीतकार कटनी निवासी पदमचंद जैन की मधुर स्वर लहरियों के साथ विधान की पूजा में 10 लक्षण पूजा, सोलह कारण पूजा , शांतिनाथ पूजा और 64 ऋद्धियों के अर्घ्य मांडने पर समर्पित किए। जिसमें सौधर्म इंद्र बने वर्षा मनीष चांदवाड के साथ अन्य पुरुष एवं महिलाओं ने पूजन की। पूजन के दौरान भक्ति भाव से सरोबार होकर पूजन कर रहे श्रावक बीच में उठ-उठ कर नृत्य करने लगे। विधानाचार्य ने बीच-बीच में विधान का महत्व बताते हुए कहा कि मान को मारना ही मार्दव को स्वीकार करना होता है। अहंकार की दीवार स्वयं के भीतर जाने नहीं देती। अहंकार के कारण विवाद, संघर्ष फैलता है। जहां अंधकार है वहां विलंब नहीं है। मात्र दुख ही वहां प्राप्त होता है। प्रवक्ता यशोवर्धन बाकलीवाल ने बताया कि कार्यक्रम के तहत शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में दोपहर 2:30 बजे हेमश्री माताजी के सानिध्य में तत्वार्थ सूत्र, शाम 6:30 बजे शांतिनाथ बाड़ा में प्रतिक्रमण और 7 बजे से आनंद यात्रा हुई। तपोभूमि प्रणेता आचार्य प्रज्ञा सागर महाराज ने कहा कि अहम के विसर्जन से ही मार्दव की शुरूआत होती है। जीवन में विनम्रता का होना बहुत ही आवश्यक है। विनय जैसा गुण ही मनुष्य को महान बनाता है। सब की आत्मा एक जैसी कोमल है। हम अपने स्वार्थवश अभिमान करके उसे कलुषित करते हैं। हमें कभी किसी वस्तु का घमंड नहीं करना चाहिए। हमें जियो और जीने दो के सिद्धांत का पालन करना है। मैं और मेरा पन के भाव का त्याग करना ही उत्तम मार्दव धर्म है। समाज और देश में शांति की स्थापना के लिए इस धर्म का अमूल्य योगदान है। निर्मल मार्दव धर्म को धारण करके ही मनुष्य सच्चे सुख का अनुभव करता है।

नलीन जैन लुहाड़िया से प्राप्त जानकारी
संकलनः अभिषेक जैन लुहाड़िया
रामगंजमंडी